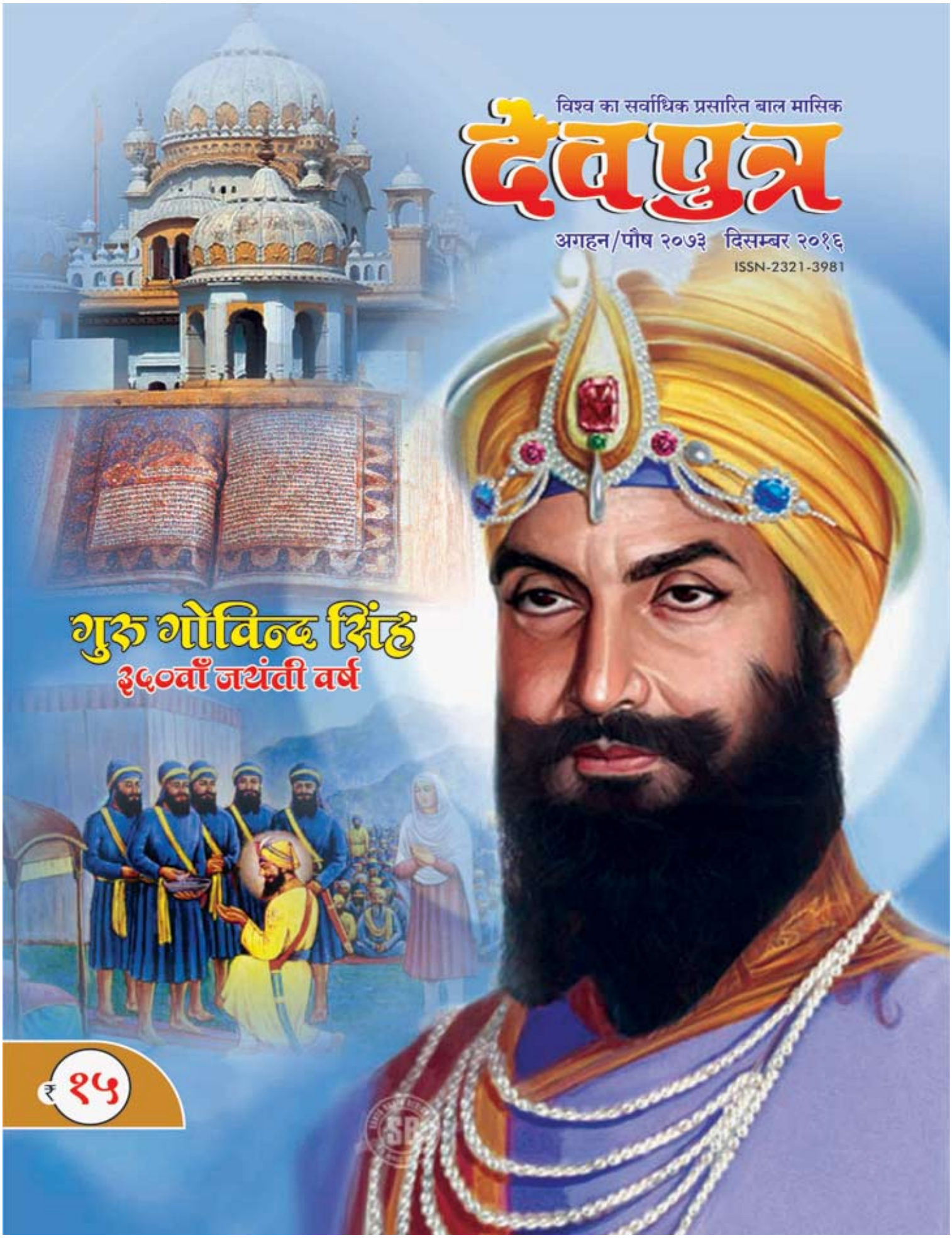

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
अगहन/पौष २०७३ दिसम्बर २०१६
ISSN-2321-3981
गुरु गोविन्द सिंह
३५०वाँ जयंती वर्ष
₹ १५

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

किरण कौशल IAS	अजय मिश्रा IPS	लोकेश कुमार सिंह IAS	प्रदीप राजपुरोहित (IPS)	निशांत जैन IAS
3rd Rank	5th Rank	10th Rank	13th Rank	13th Rank

घर बैठे IAS बनने का सपना करें साकार!

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें–
(+91) 8130392355

DLP

दूरस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम
Distance Learning Programme

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे दृष्टि संस्थान द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री, विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर ही तैयार की गई है जो किसी कारण से दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। यह पाठ्य-सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) एवं परीक्षोपयोगी बनाया गया है।

सामान्य अध्ययन (प्रा.+मुख्य परीक्षा) (26+4 Booklets) ₹12000/-	सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) (23 Booklets) ₹10000/-
सामान्य अध्ययन + सीसैट (26+4+8 Booklets) ₹15000/-	हिन्दी साहित्य- ₹6000/-
	दर्शनशास्त्र- ₹5000/-

Contact for DLP
8130392354

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

अगहन-पौष २०७३ ▪ वर्ष ३७
दिसम्बर २०१६ २०१६ ▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

अपना कृतज्ञ राष्ट्र इस वर्ष दशमेश श्री गुरू गोविन्दसिंह की ३५०वीं जयंती मना रहा है। ३५० वर्ष बाद भी किसी को स्मरण करने का क्या यह अर्थ नहीं है कि वे निश्चित ही अपने प्रकार के बिरले महापुरुष रहे होंगे?

हाँ, निश्चित ही बिरले! विश्व के इतिहास में ढूंढने से भी नहीं मिलेगी ऐसी विभूति। एक सामान्य बालक जैसी खेल कूद की उम्र में समाज की पीड़ा को समझा, पू. पिताश्री को उस पीड़ा को दूर करने के लिए तैयार किया, समय आने पर इसी हेतु से पिता का सिर कटते हुए और उनके सहयोगियों को आरे से चिरते हुए और गरम तेल के कढाव में उबलते हुए देखा- किन्तु समाज के प्रति सोच में कहीं अंतर नहीं आया।

फिर छोटी सी अवस्था में ही पिता गुरु तेग बहादुर के बलिदान के बाद गुरु गद्दी सम्हालने पर अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ मुगल सत्ता से टक्कर ली। धर्म के रक्षार्थ २ बेटों को दिवाल में चिनते हुए देखा और शेष २ को चमकौर दुर्ग की लड़ाई में बलिदान होते किन्तु ठण्डी सांस लेकर शांत कभी नहीं बैठे।

खालसा पंथ की स्थापना की, पंचप्यारे बनाकर अमृत छकाया और छका तथा विश्व को संदेश दिया कि भारत में अनेक जाति और पंथ होने के बाद भी सम्पूर्ण भारत की आत्मा एक है। **'एक संगत और एक पंगत'** का संदेश देकर राष्ट्रीय एकता की पुष्टि की।

और अंत में स्वेच्छा से गुरु के श्रेष्ठतम पद से मुक्ति लेकर गुरु ग्रंथ साहब को सदा-सदा के लिए गुरु घोषित कर एक नई परम्परा को जन्म दिया।

बच्चो! है न बिरलापन इस व्यक्तित्व का। कहीं है इतिहास में ऐसा कोई पृष्ठ जिसमें दर्शन मिल सकें ऐसे किसी दूसरे महापुरुष के?

तो आओ, प्रणाम करें इस विभूति को इस ३५०वें जयंती पर्व पर और तय करें उनके संदेश को विश्वभर में फैलाने का।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

विशेष सामग्री

- गुरु गोविन्द सिंह - बसंतसिंह गुजराती ०५
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - डॉ. सतीश मेनन १०
- धर्मरक्षक गुरु तेगबहादुर - डॉ. अरविन्द गोडबोले ११
- चमकौर के अभिमन्यु - मदनलाल बिरमानी १५
- सरहिन्द के शहीद - मदनलाल बिरमानी २१
- जो हमने कर दिखाया - कृष्णकुमार अष्ठाना २६
- बच्चों के प्रिय कवि... - डॉ. उषा यादव २७

कहानी

- ठिंगू मास्टर - डॉ. फकीरचंद शुक्ला ३१
- सबसे बड़ा गुण - डॉ. रमनसिंह यादव ३४
- खेल खेल में - नवनीत कुमार गुप्ता ३६
- छज्जू भगत - डॉ. हुंदराज बलवाणी ३८

कविता

- वीरों को प्रणाम - अश्वनी कुमार पाठक ४४

चित्रकथा

- माचिस की तीलियां - देवांशु वत्स ३०
- जन्मदिन का उपहार - देवांशु वत्स ४०

बाल प्रस्तुति

- तितली - स्मृति प्रिया ३७
- प्रकृति - सर्वेश चौहान ४७

गुरु गोविन्द सिंह

बसंतसिंह गुजराती

बालक गोविन्द का जन्म २६ दिसम्बर १६६६ को पटना में हुआ। उस समय उनके पिता गुरु तेगबहादुर आसाम के लम्बे दौरे पर थे। अपनी बाल्यावस्था में ही उन्होंने अपने श्रद्धालुओं के मन मोह लिए और वे उनके लिए प्रेम के नए केन्द्र बन गए। आरम्भ में ही उनमें आध्यात्मिक प्रतिभा के लक्षण प्रतीत होते थे। पटना के लोगों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए वे कई बार राम अथवा कृष्ण का रूप बनाकर बाहर निकलते। सारा पटना गोविन्द का अपना था। जब लोग उन्हें देखते, तो वे बहुत हर्षित होते। वे अभूतपूर्व हर्ष तथा प्रकाश बिखेरते फिरते। अपने पिता के समान ही वे सिख जनता के लिए हर्ष के नए विषय बन गए। आठ वर्ष की अवस्था में उन्हें आनन्दपुर साहिब लाया गया तथा वहां उन्होंने संस्कृत एवं अरबी का अपना अध्ययन जारी रखा। जब औरंगजेब ने उनके पिता पर अत्याचार किए तथा उन्हें मृत्यु दण्ड दिया तो वे केवल नौ वर्ष के थे। अनेक कठिनाइयों के बावजूद गुरु जी ने दृढ़ निश्चय कर रखा था कि मुगलों के राजनीतिक तथा धार्मिक अत्याचारों का प्रतिरोध करेंगे, और इसके लिए देशवासियों में उत्साह फूंकेंगे।

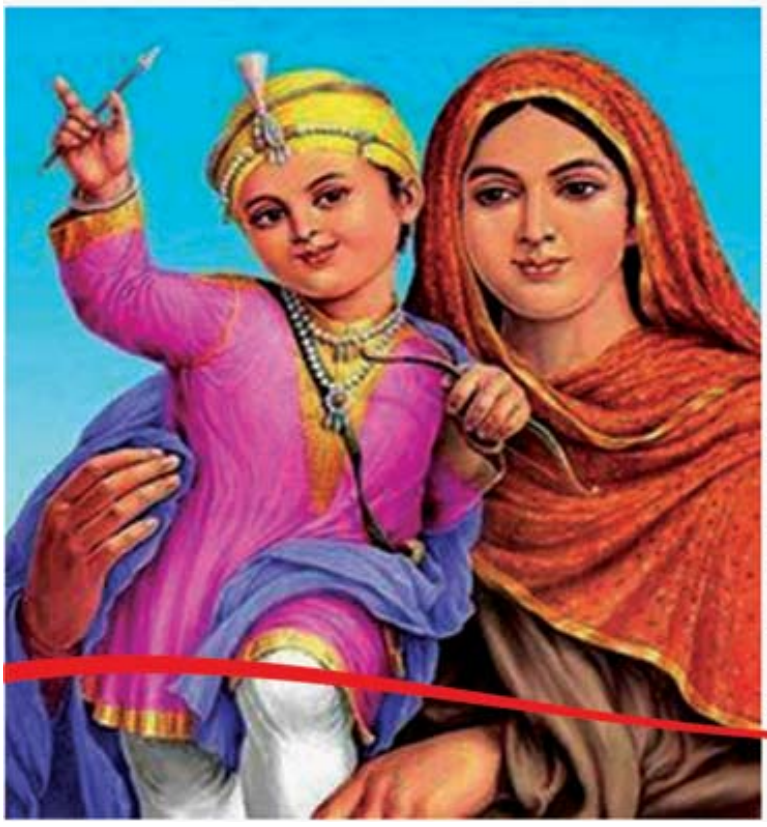

गुरु जी ने कुछ वर्षों के लिए यमुना के तट पर एकान्तवास किया, कुछ अवधि अध्ययन तथा चिन्तन में व्यतीत की, सिखों को संगठित किया, और एक दुर्ग का निर्माण किया। इसे पौंटा साहिब कहा जाता है, और यह सिखों के लिए तीर्थस्थान है। यहाँ शस्त्र एकत्र किए जाते रहे। पौंटा शस्त्रागार बन गया। सिखों की बढ़ती हुई शक्ति के प्रति पड़ोसी पहाड़ी राजा ईर्ष्या करने लगे और परिस्थितियां ऐसी विकसित हो गई कि सन् १६८६ के आरम्भ में पौंटा से छः मील की दूरी पर भंगनी के स्थान पर डटकर लड़ाई लड़ी गई। जिसमें गुरुजी ने पहाड़ी राजाओं की सेनाओं को पूर्णतः पराजित किया। विजयोत्सव मनाने के लिए गुरुजी आनन्दपुर लौट आए तथा आनन्दगढ़ के दुर्ग की नींव रखी तथा लोहगढ़, केसगढ़ और फतेहगढ़ नामक तीन और दुर्गों का निर्माण करवाया।

कवि, चित्रकार तथा विद्वान आकर गुरुजी के पास रहने लगे। उन्होंने अपने अनुयायियों में कला तथा ज्ञान के विकास को प्रोत्साहित किया। आनन्दपुर में साहित्य तथा कला का पुनरुत्थान हुआ। उन्होंने रणजीत नगाड़ा नामक एक बड़ा ढोल बनवाया, जिसे प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल प्रार्थना के समय बजाकर यह घोषणा की

जाती थी कि सिख राजनीतिक तथा धार्मिक अत्याचार का प्रतिरोध करते हैं और स्वतंत्रता के लिए कृतसंकल्प हैं। उन्होंने सभी सिखों को शस्त्रों के प्रयोग की शिक्षा दी। १६९५ तक सभी प्रेक्षकों को यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा था कि मुगलों के शक्तिशाली साम्राज्य का विनाश आरम्भ हो चुका है। १७०१ तथा १७०३–४ में आनन्दपुर की लड़ाइयों और दिसम्बर, १७०४ में चमकौर की लड़ाई के पश्चात् उन्होंने वर्तमान जिला फिरोजपुर में खिदराना के स्थान पर मुगलों से अन्तिम लड़ाई लड़ी और उन्हें पराजित किया। तत्पश्चात् वे तलवण्डी साहब (दमदमा) में बस गए और धर्म प्रचार आरम्भ कर दिया।

उन्होंने भीरु एवं निर्जीव मानव–समूह में नया जीवन फूंकने का महान् कार्य किया तथा सरल एवं भोले उपासकों को आत्म सम्मानी नागरिकों में परिवर्तित कर दिया। उनमें नम्र एवं साधारण मनुष्य को साहसी वीर में परिवर्तित करने की क्षमता थी। उन्होंने अपने अनुयायियों के धार्मिक जीवन में आमूल परिवर्तन किया। उन्होंने मानव जाति की सेवा के लिए सिखों के समूचे आचरण को विनियमित करने पर बल दिया और एकता तथा सहनशीलता की आवश्यकता को महत्त्वपूर्ण माना।

उनका सिद्धान्त वाक्य था– **समस्त मानव जाति को एक जाति मानो।**

गुरु जी जो हिन्दु संस्कृति के महान् संरक्षक थे उन्होंने जाति–पांति पर आधारित भेद–भावों को अस्वीकार कर दिया और विभिन्न निम्न तथा उच्च जातियों के लिए, एक समान आचार संहिता का प्रचार किया। वे राष्ट्रीय एकता का प्रचार करते थे। उन्होंने सभी जातियों को एक समूह में पिरोया। निम्न तथा उच्च, धनी तथा निर्धन सभी को मिलाकर एक समुदाय की रचना की। वे सर्वदा निर्धन तथा निर्बल तथा दलित वर्गों को प्रेम करते थे। इस आदर्श को यथार्थ में परिवर्तित करने के लिए उन्होंने संगत तथा पंगत की परम्पराएं प्रचलित कीं। उन्होंने समाज को विभिन्न वर्गों में विभाजित करने वाली हिन्दुओं की जाति–पांति की परम्परा की निन्दा की। उन्होंने सभी सामाजिक भेद–भावों को समाप्त कर दिया।

गुरु गोविन्दसिंह नीले रंग के घोड़े की सवारी करते हैं, धनुष–बाण धारण करते हैं, उनके कमर में कृपाण

उनकी आँखें हर्ष एवं आत्मा के पराक्रम से चमकती हैं। हर्ष के न समाने के कारण उनका हृदय प्रसन्न है।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने चमकौर (जो अब तहसील रोपड़, पंजाब में है) में एक छोटे दुर्ग पर कब्जा कर लिया था। वहां उनके दोनों पुत्र अजीतसिंह तथा जुझारसिंह थे, जिनकी आयु क्रमशः १५ तथा १३ वर्ष की थी। उनके अतिरिक्त वहां चालीस सिख और थे। दुर्ग पर शत्रु का घेरा पड़ा हुआ था। तथा युद्ध करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। इस अवसर पर अजीतसिंह जी ने अपने पिता को इस प्रकार सम्बोधित किया–

''हे पिता! मुझे भी मृत्यु की इच्छा है तथा मैं अपने भाइयों के साथ यह सम्मान प्राप्त करना चाहता हूँ।''

''मेरे बच्चे, जाओ, अकाल पुरुष की यही इच्छा है।''

अजीतसिंह लड़ाई में कूद पड़े और शहीद हो गए।

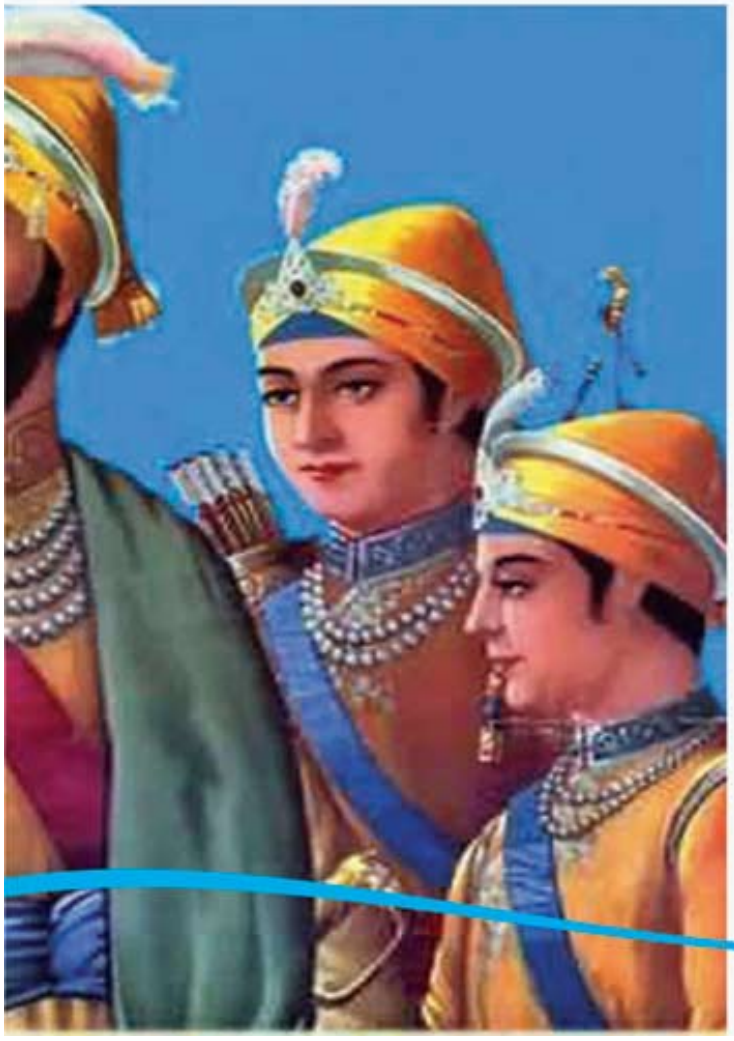

उस समय पिता अपने पुत्र की आत्मा के लिए प्रार्थना कर रहे थे। जब उन्होंने आँखें खोलीं तो देखा कि तेरह वर्षीय जुझारसिंह उनके सामने हाथ बांधे खड़े कह रहे हैं–

''मैं भी अपने भाई के साथ जाना चाहता हूं।''

''तुम बहुत छोटे हो।''

''पिता जी क्या मैंने पवित्र अमृत नहीं पिया है? मुझे आशीष दो पिता जी।''

''मेरे बच्चे, जाओ, भारत माता पुकार रही है?

किन्तु वह लौट आए, कहने लगा कि वह प्यासा है। पिता ने उत्तर दिया–''मेरे बच्चे, जाओ, यहां अब तुम्हारे लिए पानी नहीं है। देखो, तुम्हारी ओर अमृत का प्याला लिए तुम्हारा भाई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।''

ऐसे वीर तपस्वी गुरुजी का संदेश था –''मैं चाहता हूं कि तुम सभी एक धर्म अपनाओ तथा एक पथ पर चलो, धर्म की सभी भिन्नताओं को मिटा दो। हिन्दुओं के चारों वर्ण, जिनके लिए शास्त्रों के भिन्न–भिन्न नियम निर्धारित हैं, वे सब मिल जाएं, परस्पर सहयोग करें। कोई भी अपने को दूसरे से ऊँचा न समझे...''

मानव जाति की समानता को दृष्टिगत रखते हुए गुरु गोविन्दसिंह ने विभिन्न जातियों में से चुने हुए पंच प्यारों को एक ही पात्र में से अमृत पिलाया तथा फिर इन पांचों प्यारों के अधिकार को सर्वोच्च मानते हुए उसी पात्र में से स्वयं खालसा का अमृत पिया। ऐसा करके उन्होंने अस्पृश्यता तथा जाति–पांति को समाप्त कर दिया। संसार में किसी धर्म के इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं मिलता, जिसमें गुरु स्वयं अपने शिष्यों का शिष्य बन गया हो। उन्होंने आनन्द पुर में आदर्श गणतंत्र की स्थापना की, जहाँ उच्च जाति वालों तथा अस्पृश्य वर्गों, दोनों को लंगर में जाने का समान अधिकार था। उन्होंने जाति–पांति का खण्डन करके अपने को लोक–सेवक घोषित किया।

वे देश प्रेम को जाति तथा समुदाय के प्रति प्रेम से ऊपर मानते थे तथा इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे।

उन्होंने स्वार्थपूर्ति के स्थान पर निःस्वार्थ सेवा को मानवीय क्रियाओं के मूलभूत उद्देश्यों का आदर्श माना। प्रत्येक नागरिक सम्मान के साथ रह सके और जाति पांति के आधार पर उनके साथ कोई भेद–भाव न किया जाए।

उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श नैतिक मानदण्ड निर्धारित किए, इनसे आधुनिक समाज सुधारकों की आँखें खुल जाती हैं। उन्होंने लोगों को कहा कि सच बोलो, अपना जीवन ईमानदारी से बिताओ तथा अपने जो साथी कठिनाई में हों उनकी सहायता करो। उनका कथन है–

''लोकसेवा ही सच्ची सेवा है। योग्य पात्रों को दिया गया दान इस लोक में तथा परलोक में फलदायक होगा। अन्य सभी दान तथा बलिदान व्यर्थ हैं। ऊपर सिर से लेकर पांव तक जो कुछ भी मेरा हैं, उसे मैं इन लोगों को अर्पित करता हूं।''

इसका परिणाम यह निकला कि सिखों ने दलित तथा पीड़ित वर्गों की सेवा करना अपना कर्तव्य मान लिया।

उन्होंने देश के सभी मनुष्यों को राष्ट्रीयता का संदेश दिया। गुरु जी ने धर्म निरपेक्ष क्रिया को आध्यात्मिक रंग दिया। सैयद मुहम्मद लतीफ ने 'हिस्ट्री आफ पंजाब' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है, ''उपदेशकर्त्ता के रूप में वे विधानकार थे, युद्ध क्षेत्र में योद्धा थे, मसनद पर राजा थे तथा खालसा की संगति में फकीर थे।''

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गुरुजी किसी सम्प्रदाय अथवा वर्ग के शत्रु नहीं, अपितु मानव जाति की समानता में उनका विश्वास था। अन्ततः एक दिन आया जब गुरुजी ने एक नरियल तथा पांच पैसे मंगवाए और उन्हें ग्रंथ साहिब के सामने भेंट करके उन्होंने कहा–

''अकाल पुरुष का यही आदेश है,
उन्होंने कहा–
'सब सिक्खन को हुक्म है, गुरु मानिये ग्रंथ'

इसके बाद ग्रंथ साहिब ही सिक्ख समाज में गुरू के रूप में पूजे जाने लगे। अर्थात् वे अंतिम गुरू थे और उसके बाद गुरु परम्परा समाप्त हो गई।

सन् १७०८ ई. में उन्होंने इस संसार से विदा ली।

छोटे से बड़ा

३५०वीं जयंती पर गुरु गोविन्द जी अनेक चित्र प्रकाशित हुए
जरा पहचाने कौन सा चित्र किससे बड़ा है?

(उत्तर इसी अंक में।)

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी

डॉ. सतीश मेनन

गुरु गोविन्द सिंह जी ने ज्योति-जोत समाने से पहले खालसा को शब्द गुरु, गुरुग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानने का आदेश दिया। आगे से दस गुरुओं की ज्योति वाणी को ही गुरु माना गया और सिखों के लिए देहधारी गुरु वर्जित हो गया। गुरु गोविन्द सिंह जी ने दुनिया के अंत तक गुरवाणी अकाल पुरख रूप कहकर गुरुग्रंथ साहिब को गुरु स्थापित कर दिया है।

गुरुग्रंथ साहिब की पवित्र वाणी वाहिगुरु की प्रशंसा है, अकाल पुरख का नाम है, और गुरु सिखों के लिए युग-युगांतरों तक अटल गुरु है। गुरु सिख गुरुग्रंथ साहिब के दर्शन करके, वाणी पढ़कर सोच-विचार कर गुरु की शरण में जाते हैं और सांसारिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त करते हैं।

गुरुग्रंथ साहिब के १४३० पृष्ठ हैं और संपूर्ण वाणी ३१ रागों में है। इसमें सिख गुरुओं के अतिरिक्त अन्य भक्तों एंव पीरों-फकीरों की वाणी भी संकलित है। बाबा फरीद, भक्त रविदास, भगत सदना, भक्त बेणी, भक्त नामदेव आदि अनेक भक्तों की वाणी गुरुग्रंथ साहिब का अंग है।

गुरुग्रंथ साहिब की विशेषता यह है कि इसकी सम्पूर्ण वाणी गुरु साहिबान ने स्वयं लिखवाई, प्रमाणित की एवं बीड़ में स्थापित करवाई। यह अलौकिक वाणी गुरु वाणी है और जिज्ञासु को अकाल पुरख परमपिता परमात्मा से जोड़ती है। सर्व साँझी गुरुवाणी ही सच्चे धर्म और श्रेष्ठ मार्ग की प्रदर्शक है। सम्पूर्ण मानवता को इस महान ग्रंथ से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है।

धर्मरक्षक गुरु तेगबहादुर

डॉ. अरविन्द गोडबोले

बात तब की है जब कश्मीर के मुगल सुबेदार शेफ अफगान और इफ्तिकारखान ने जबरदस्ती से हिन्दुओं का धर्मातरण करना प्रारंभ कर दिया। कश्मीरी ब्राह्मणों को अपना विशेष रूप से शिकार बनाया। कश्मीर से बहुत बड़ी संख्या में कश्मीरी ब्राह्मणों का एक शिष्ट मण्डल श्री किरपाराम जी के नेतृत्व में श्री गुरु तेगबहादुर जी के पास आने के लिए निकल पड़ा।

सन् १६७५ ई. के २५ मई के दिन यह प्रतिनिधि मण्डल आनन्दपुर आ पहुंचा। कश्मीर में जब हिन्दुओं पर संकट आया तब उन्हें पंजाब में सिख गुरु के पास सुरक्षा के लिए जाने की इच्छा हुई।

श्री गुरु तेगबहादुर जी का निश्चय– आनन्दपुर की सिख सभा में जब श्री गुरु तेगबहादुर जी ने कश्मीर में हिन्दुओं पर किए जाने वले भयानक अत्याचारों को सुना तो वे निस्तब्ध से रह गए। एक लोकोक्ति यह भी है कि उस समय बालक गोविन्दराय वहीं आसपास खेल रहा था। अपने पिता को इस तरह निस्तब्ध होते देखकर वह उनके पास आया और उसने पूछा कि–''आप बोलते क्यों नहीं है?'' तब श्री गुरु तेगबहादुर जी ने उत्तर दिया कि–''तू अभी छोटा बालक है। तुर्कों द्वारा भयानक जुल्म ढाये जा रहे हैं, अत्याचार किये जा रहे हैं। सारी दुनिया उनसे त्राहि–त्राहि हो रही है। ऐसा कोई बहादुर दिखाई नहीं दे रहा है जो अपने प्राण संकट में डालकर इस दुनिया को मुसलमानों के अत्याचारों से मुक्त कर सके। उस पर छोटे से गोविन्दराय ने झट कहा– ''आप से बढकर कौन योग्य व्यक्ति हो सकता है।'' अपने ही मन की बात अपने पुत्र के मुंह से सुनकर श्री गुरु तेग बहदुर जी ने कश्मीरी ब्राह्मणों की मदद का निर्णय लेकर कश्मीरी ब्राह्मणों से कहा– ''आप लोग औरंगजेब को संदेश भेज दीजिए कि– ''नौवें गुरु जो श्री गुरु नानकदेव जी के आसन पर विराजित हैं, वे हमारे धर्म के रक्षक हैं। पहिले उन्हें मुसलमान बना लीजिए बाद में हम भी मुसलमान बन जायेंगे।

कश्मीरी पंडितों के द्वारा इस संदेश को भेजने के बाद श्री गुरु तेगबहादुर जी को बंदी बनाना अपेक्षित ही था। उन्हें कब बंदी बनाया गया इस विषय में मतभेद है। बादशाह के बुलाने पर श्री गुरु तेगबहादुर जी ने कहला भेजा कि वे बरसात के बाद आवेंगे और इतिहासकार मेकालिफ के मतानुसार वे सन् १६७५ के जून माह में जाने के लिए निकले थे और अक्टूबर १६७५ तक वे बहादुर गढ़ में रहे थे। श्री हरबनसिंह के मतानुसार श्री गुरु तेगबहादुर जी ११ जुलाई १६७५ को आनन्दपुर से रवाना हो गए थे और उन्हें दूसरे ही दिन मलिकपुर में बंदी

बनाकर और लोहे के पिंजड़े में रखकर सरहिन्द ले जाया गया था। श्री गुरु तेगबहादुर जी के साथ श्री मतीदास जी, श्रीगुरुदित्त जी, श्री उदाजी, श्री चिमा जी और श्री दयाल जी ये पांच सिख थे। सरहिन्द के कारागृह में तीन मास रखने के बाद श्री गुरु तेगबहादुर जी और अन्य पांच सिखों को ४ नवम्बर १६७५ ई. के दिन दिल्ली लाया गया।

मुगल बादशाह और अन्य सुलतान यह मानते थे कि वही सच्चा धर्म और सच्चा साधु है जो चमत्कार कर सकता है। अथव चमत्कार दिखाने वाला ही सच्चा साधु या सच्चा धर्म होता है। इसलिए उन्होंने श्री गुरु तेगबहादुर जी को भी कोई चमत्कार दिखाने के लिए कहा। इस तरह से कोई अनहोनी घटना करना अथवा चमत्कार दिखाने के लिए कहना तो मुगलों या मुसलमान शासकों का एक बहाना होता था जिसके द्वारा वे हिन्दुओं, साधु संतों को यातनाएं देते थे या उनको प्राणदण्ड देते थे। सिख गुरु प्रारम्भ से ही चमत्कार करने या दिखाने के विरुद्ध थे। इसलिए श्री गुरु तेगबहादुर जी ने चमत्कार दिखाने से साफ इंकार कर दिया।

अतः श्री गुरु तेगबहादुर जी एवं उनके साथ के सिखों के सामने मुसलमान धर्म स्वीकार करने का पर्याय रखा गया। इस पर्याय को भी उन्होंने निर्भयतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

श्री आनन्द जी के मतानुसार शायद श्री गुरु तेगबहादुर जी ने भविष्य में होने वाली होनी का अनुमान लगा लिया था। इसलिए अपने पश्चात् गुरु गद्दी पर श्री गुरु की नियुक्ति करना उनके लिए अनिवार्य हो गया था। ८ जुलाई १६७५ ई. को उन्होंने अपने इकलौते बेटे श्री गोविन्दराय जी को भावी गुरु घोषित कर दिया। श्री त्रिलोचन सिंह जी के मतानुसार दिल्ली पहुंचने के बाद श्री गुरु तेगबहादुर जी ने श्री गुरु गोविन्दराय जी की नियुक्ति की घोषणा कर दी थी।

सभी पर्याय अस्वीकार कर देने के पश्चात एक भीषण नाटक के अंतिम अंक के दृश्य प्रारंभ हुए। चांदनी चौक में भाई मतिदास जी को दो खम्भों के बीच बांधकर सिर की ओर से आरी चलाकर दो टुकड़ों में चीर दिया गया। श्री सतिदास जी तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। श्री दयालदास जी को खौलते हुए तेल में डालकर मार डाला गया।

जिनके शिष्य इतने निर्भयतापूर्वक मृत्यु का सामना

कर रहे थे उनके गुरु क्योंकर विचलित होते।११ नवम्बर १६७५ ई. के अगहन शु. ५ संवत् १६३२ के दिन चांदनी चौक की कोतवाली में सुबह ११ बजे श्री गुरु तेगबहादुर जी का शिरच्छेद कर दिया गया। उत्पीड़न एवं अन्याय से मारनेवाले को क्षमाप्रदान करने वाले साधु संत पुरुष के द्वारा धर्मान्ध विदेशी शासकों के प्रति यह मौन विरोध था। आगे चलकर इस मौन विरोध की परिणति वीर गर्जना में हुई। किन्तु वह सब तो बाद की बात है।

श्री गुरु अर्जुनदेव के पश्चात शहीद हुए श्री गुरु तेगबहादुर जी दूसरे गुरु थे। सिखों के इतिहास में श्री गुरु तेगबहादुर जी का बलिदान एक हृदयस्पर्शी एवं प्रेरणादायी घटना है। श्री गुरु अर्जुनदेव जी एवं श्री गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान से सिखपंथ का स्वरूप ही बदल गया। भक्तिमार्ग शक्तिमार्ग में परिवर्तित हो गया। जपमाला का स्थान तलवार ने ले लिया या यों कहे सकते हैं कि शास्त्रों का स्थान शस्त्रों ने लिया। श्री गोविन्दराय जी ने अपने पिता का गौरव कहते हुए कहा कि उन्होंने चमत्कार करने के लिए मना करके हिन्दुओं के माथे का तिलक और गले के जनेऊ की रक्षा करने के लिए बहुत बड़ा साका किया था।

''धर्महित साका जिन कीआ। सीस दिआ पर सिर्र न दिआ।।''

इन शब्दों में अपने पिता के जीवन का सार बताकर श्री गुरु गोविन्दराय जी ने अपने पिता का गौरव किया है। दशमगुरु द्वारा लिखित ''विचित्र नाटक'' में वर्णन है कि ''श्री गुरु तेगबहादुर जी की मृत्यु से सारा संसार शोकाकुल हो उठा, सारी दुनिया रोई किन्तु सुरलोक में उनका जय जयकार हुआ।''

श्री गुरुदेव जी का अंतिम संस्कार करना उस विपरीत वातावरण में अत्यंत कठिन एवं भयप्रद बात थी। श्री गुरु तेगबहादुर जी का शिरच्छेद हुआ उस दिन दिल्ली में भयंकर अन्धड़ के साथ आंधी तूफान आ गया था। उस अन्धड़ की धमा चौकड़ी में भाई लाखी शाह नामक लबानी (भिश्ति) सिख ने और उसके आठ पुत्रों ने श्री गुरुजी का मस्तक विहीन धड़ उठाकर गाड़ी पर रखा और अत्यंत शीघ्रता से उसे घर ले आए और उसे घर के भीतर रखकर घर को आग लगा दी जिस घर में श्री गुरुदेव जी के शरीर को रखकर उसक दहन किया गया था उस स्थान पर दिल्ली में रिखबगंज गुरुद्वारा खड़ा है। चांदनी चौक में जहाँ श्री गुरुदेव जी का शिरच्छेद किया गया था उस स्थान पर अब शीशगंज गुरुद्वारा है।

श्री गुरुदेव जी का धड़ से अलग हुआ मस्तक लेकर जैका नामक एक रंगरेटा (सफाई करने वाला) सिख बड़ी बहादुरी के साथ आनन्दपुर आ पहुंचा। अत्यंत साहस का कार्य करने वाले इस रंगरेटा को श्री गुरुगोविन्द सिंह जी ने अपने आगोश में ले के ''रंगरेटे गुरु के बेटे'' कहकर सम्मानित किया। उस स्थान पर भी शीशगंज गुरुद्वारा बनाया गया।

रिखबगंज गुरुद्वारा का उल्लेख इसके पूर्व ही किया गया है। श्री गुरुद्वारा के धड़ के फूल (राख) एक बर्तन में रखकर जहाँ जमीन में गाड़ दी गई थी। उस स्थान पर सौ साल बाद यह शीशगंज गुरुद्वारा बनाया गया। सन् १८५० ई. में मुसलमान शासकों ने उस गुरुद्वारा को तोड़कर उस स्थान पर मस्जिद बनाई परन्तु सन् १८६१ ई. में न्यायलय के निर्णय के अनुसार वह स्थान सिखों को वापस कर दिया गया।

पहुँचाओ तो जानें

पंजप्यारों को सार्द्ध त्रिशताब्दी समारोह हेतु
पटना साहिब तो पहुंचाइए।

● राजेश गुजर

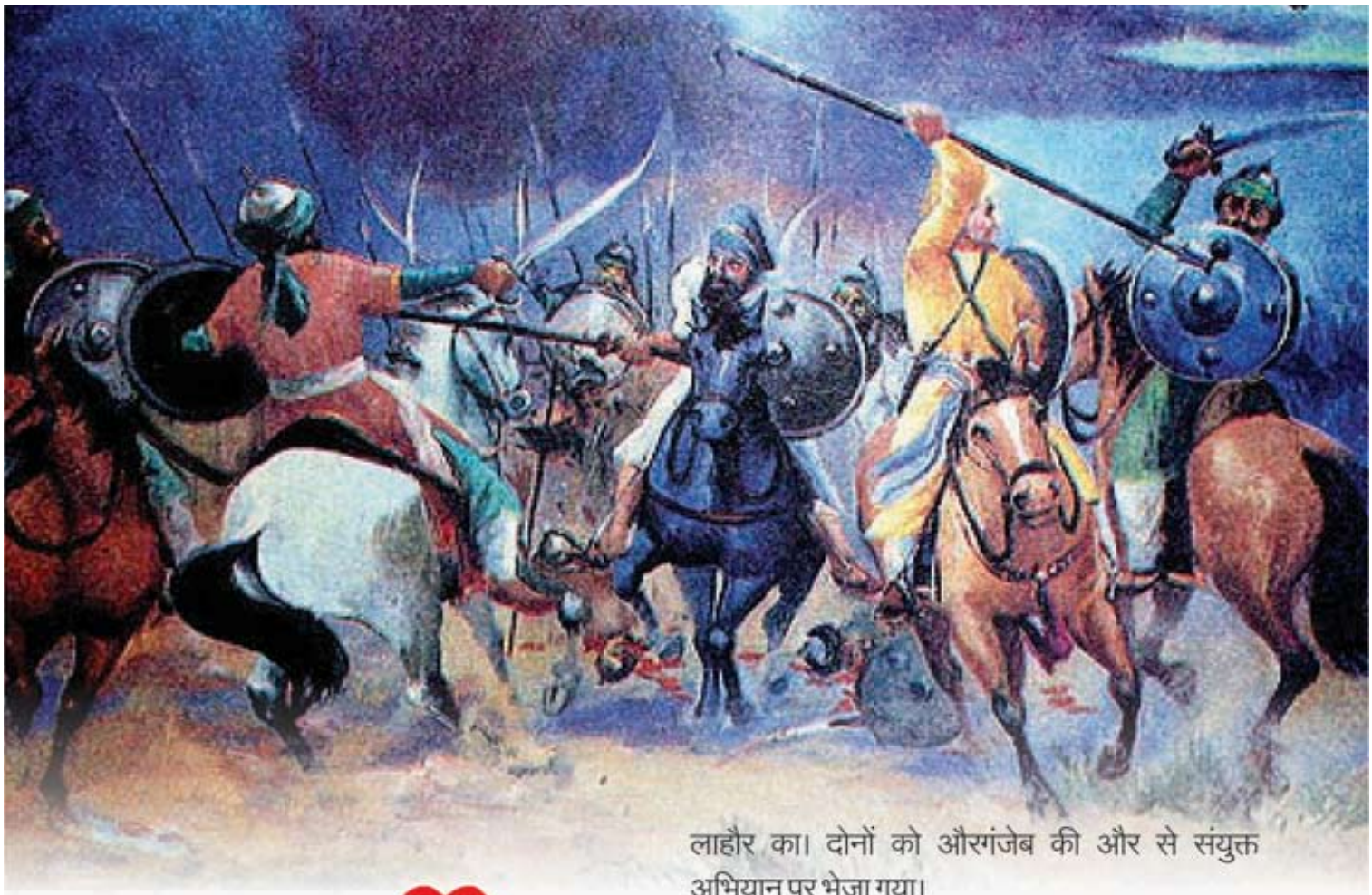

चमकौर के अभिमन्यु

मदनलाल बिरमानी

सन् १७०४ ईस्वी। २१ और २२ दिसम्बर की मध्य रात्रि। विशाल मुगल सेना छोटे से चमकौर गांव को घेरे पड़ी थी। पंजाब की सर्दी अपने यौवन पर थी। पर इसकी ओर किसी का ध्यान न था।

सेनापति वजीर खां और उसका सहयोगी जबरदस्त खां एक खेमे में मिल-बैठ विचार विमर्श में व्यस्त थे। वजीर खां सरहिन्द का नवाब था और जबरदस्त खाँ लाहौर का। दोनों को औरंगजेब की और से संयुक्त अभियान पर भेजा गया।

वजीर खां ने कहा-''खान! किस मिट्टी का बना है यह गुरु गोविन्द सिंह? आनन्दपुर में सिर्फ कुछ हजार सैनिकों की मदद से हमारी दस लाख की शाही फौज से आठ माह तक जुझता रहा। फाके व दूसरी मुश्किलों, यहां तक कि मौत का खौफ भी उसे विचलित न कर सका।''

''हमने शहंशाह औरंगजेब का हस्ताक्षरित पत्र उसे भेजा था, जिसमें कुरान की कसम खाते हुए यह कहा गया था कि अगर आप आनन्दपुर खाली कर दें, तो जहां चाहे सुरक्षित जा सकेंगे। तब गत रात गुरु, उसका परिवार और उसके साथी आनन्दपुर से निकलकर अभी कुछ मील ही गए थे। कि हमने बड़ी अय्यारी से अपनी सब कसमें तोड़कर उन पर हमला कर दिया। घमासान युद्ध छिड़ गया। हम लाखों में थे और वे सैकड़ों में। उनके एक तरफ बर्फानी पानी वाली सरसा नदी थी और दूसरी तरफ हमारी असंख्य सेना-साक्षात मौत! उनके लिए अब एक ही रास्ता था कि किश्तियों के अभाव में सरसा नदी के

हड्डियों को भी जाम देने वाले ठंडे व तेज बहाव किस तरह पार करके इस तरफ आ जाएं।'' वजीर खां बोले जा रहा था।

''हुआ भी यही'', वह पुनः बोला, ''पर वे बड़े रणकुशल निकले। मुझे तो आज का सरसा नदी पर गुरु के बड़े लड़के का बहादुराना किरदार कभी न भूलेगा। ओह! गुरु का यह लड़का, क्या नाम है उसका–अजीत! बला का लड़का है। उसने अपने साथ कुछ सैनिकों को लेकर हमारी फौज का रास्ता ही रोक लिया। वह वहां तब तक डटा रहा, जब तक कि गुरु और बाकी लोग इस सरसा नदी में अपने घोड़ों सहित कूदकर इस पार नहीं आ गए...''

''दुरस्त कहते हो, जबरदस्त खाँ ने बीच में टोका– ''वह है तो कम उमर का, पर है बड़ा खुद्दार। हो भी क्यों न! हिन्दुओं के पीर का ही तो बेटा है। मुझे याद आ रहा है। जिस दूत को हमने आनन्दपुर भेजा था, उसी ने आकर बताया था कि उसने गुरु को हमारा यह पैगाम दिया था कि 'शाही फौज छोटे–मोटे पहाड़ी राजाओं की तरह नहीं। यह महान और शक्तिशाली औरंगजेब की फौज है। आप इसका ज्यादा देर तक सामना न कर सकेंगे। इसलिए आपको शहंशाह के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए युद्ध का विचार छोड़कर मुसलमान बन जाना चाहिए।' तो जानते हो क्या हुआ? गुरु के पास खड़े इस लड़के का चेहरा तमतमा गया। अपनी तलवार सोंतकर बोल उठा, बन्द कर यह बकवास। एक भी शब्द और बोला तो तुम्हारा सर कलम करके रख दूंगा। तुमने गुरु जी के सामने ऐसे शब्द कहने की हिम्मत ही कैसे की?''

उनको गम यह था कि वे गुरु गोविन्द सिंह को अभी तक काबू न कर सके थे। साथ ही यह भय भी था कि शायद वे इस काम में सफल हो ही न सकें।

''नदी पार करते हुए गुरु के सैनिकों में से सैकड़ों स्वर्ग सिधार गए हैं,'' वजीर खां फिर बोला–''बहुतेरे डूब गए। तेज बहाव उन्हें साथ बहा ले गया। बचे हुए सौ सैनिकों ओर दो बेटों, अजीत और जुझार को साथ लेकर गुरु रोपड़ की तरफ चल पड़ा। उसने अपनी दोनों बीवियों (माता सुन्दरी व माता साहिब कौर) को दिल्ली की तरफ भेज दिया। उसकी तीसरी बीवी जीतो का बहुत पहले देहान्त हो चुका है। गुरु का परिवार इकट्ठा न रह सका। दो छोटे बेटे, जोरावर सिंह व फतेह सिंह अपनी दादी (माता गुजरी) के साथ कहीं अलग खो गये हैं। इधर रोपड़ के पठानों को गुरु के आने का समाचार मिला तो वे सैकड़ों की तादाद में इकट्ठे हो गए कि गुरु को या तो पकड़ लेंगे या मार डालेंगे। पर गुरु अपने रण–बांकुरों के साथ इस पठानी दीवार को तोड़कर यों निकल गया जैसे बिजली दरख्तों के झुण्ड पर गिरकर उन्हें झुलसाती हुई पलक झपकते ही गायब हो जाती है। उसके बाद अब गुरु यहां चमकौर गाँव में आ गया है।''

''नवाब साहिब! मान गए, आपके पास गुरु गोविन्द सिंह के बारे में पल–पल की खबर है। पर आप यह सब

किसे सुना रहे हैं? सवाल तो यह है कि अब हमें उसे पकड़ना किस तरह है।'' जबरदस्त खां ने विषय को जल्दी समेटना चाहा।

''बहुत जल्दी ऊब जाते हो दोस्त?'' वजीर खां ने कहा–''हिन्दुओं का यह गुरु मेरे चंगुल से कई बार बच निकला है। यह उसकी खुशकिस्मती ही थी। पर अब इसका बच निकलना नामुमकिन है। चिड़िया हमारी मुट्ठी में है। भला क्या मुकाबला है उसकी गिनती के चालीस सैनिकों और हमारी इस विशाल दस हजार की फौज का?''

उसने ठहाका लगाया और शेखी बघारता हुआ फिर बोला– ''बस देखते जाओ, कैसे मसलकर रख देता हूं उसे और उसके साथियों को।''

फिर दोनों प्रातः की रणनीति तय करने में जुट गए। शीघ्र ही वजीर खां ने बाहर खड़े रक्षक दल के प्रमुख को बुलाने के लिए ताली की दो थापें दीं। फिर उसे हुक्म दिया कि चमकौर गांव में ढिंढोरची को भेजकर इसी समय यह एलान करवा दो कि 'सब गांव वालों को खबरदार किया जाता है कि गुरु गोविन्द सिंह अपने कुछ शिष्यों और दो बेटों के साथ गरीबू जाट की हवेली में पनाह लिए हुए है। जिस भी व्यक्ति ने उसकी मदद करने की कोशिश की, उसे सरहिन्द के नवाब वजीर खां के हुक्म से कत्ल कर दिया जाएगा।' और देखो! गरीबू की हवेली के पास ढोल बजाकर यह एलान खास तौर पर करवा दो कि 'गुरु गोविन्द सिंह आखिरी मौका दिया जाता है कि अगर वह हथियार डालकर अपने आपको शाही फौज के हवाले कर दे तो उसे दुश्मन नहीं माना जाएगा। नवाब साहिब शहंशाह औरंगजेब से उसे बख्श देने की सिफारिश करेंगे। अगर उसने ऐसा न किया तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा।'

गुरु जी के लिए यह घोषणाएं इस बात का संकेत थीं कि संकट अब बिल्कुल सिर पर आकर खड़ा हो गया है। पर वे जरा भी विचलित न हुए। उन्होंने अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों की कभी चिन्ता न की थी। चिन्ता बस यही थी कि समाज पर छाये संकट के बादल कैसे दूर हों, हिन्दू धर्म को ग्रसने को आतुर हुए मुगलों का आतंक किस प्रकार नष्ट हो।

उन्होंने चालीस की सीमित संख्य के अपने सैनिकों को छोटी–छोटी टुकड़ियों में बांटकर गढ़ी में चारों ओर समुचित स्थानों पर नियुक्त किया और स्वयं दोनों साहिबजादों तथा भाई दयासिंह व संतसिंह के साथ अटारी पर खड़े हो गए ताकि चारों ओर फैले शत्रु की गतिविधियों पर पूरी तरह से दृष्टि रखी जा सके।

उनमें से प्रत्येक को पता था कि मृत्यु सर पर मंडरा रही है। पर गुरु जी की टेक थी कि शत्रु के आगे हथियार डालने की बजाए मृत्यु का वरण करना अधिक श्रेयस्कर है।

प्रातःकाल होते ही वजीर खां और जबरदस्त खां की संयुक्त सेना ने गरीबू की हवेली को घेरकर हल्ला बोल दिया। किंतु उसे भारी क्षति उठाकर पीछे हटना पड़ा।

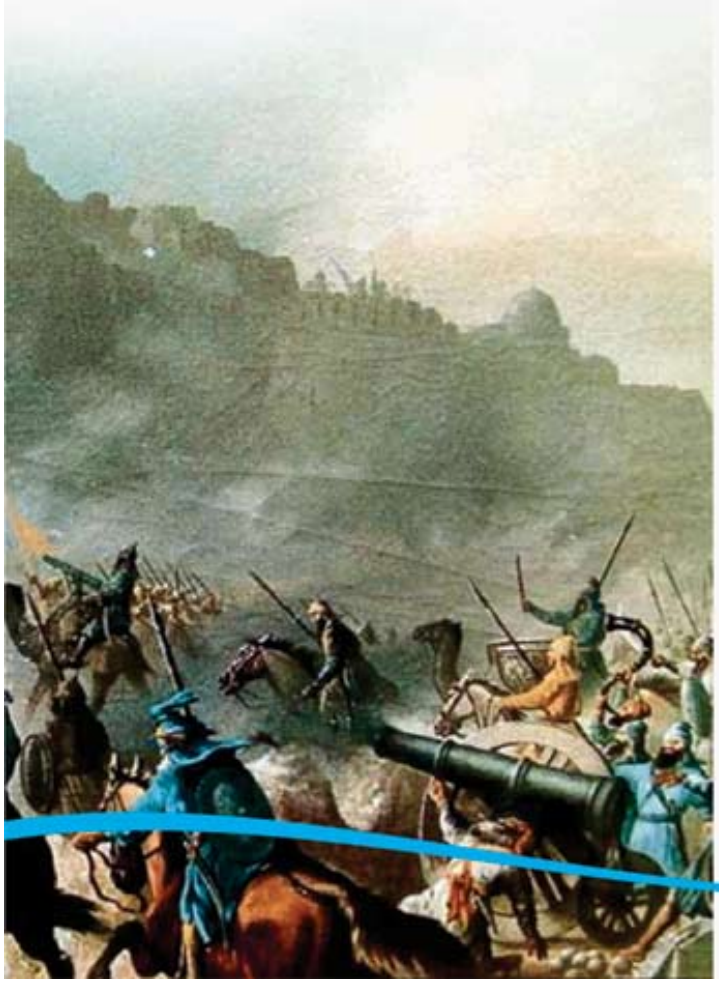

गुरुजी के बाणों की मार से एक मुगल नायक नाहर खाँ मारा गया। एक और नायक ख्वाजा मुहम्मद ने गढ़ी (गरीबू की हवेली) की दीवार के साथ लग-छिप कर जान बचाई।

अब वजीर खां ने गढ़ी के मुख्य द्वार को तोड़ने के लिए उधर दबाव बढ़ाना शुरु कर दिया। इसे भांपकर गुरु जी ने पांच सैनिकों को शत्रु को रोकने के लिए बाहर निकल कर भिड़ जाने का आदेश दिया।

पांचों योद्धा बड़ी वीरता से लड़े। सैंकड़ों को मार गिराया। किन्तु विशाल सेना के सामने ज्यादा देर तक न टिक सके। लड़ते-लड़ते बलिदान हो गए। शत्रु की गति रोकने के लिए तब पाँच मरजीवड़ों का दूसरा जत्था निकला। शत्रु पंक्तियाँ में खलबली पैदा करता और भारी मारकाट मचाता वीरगति को प्राप्त हो गया। इस प्रकार चार-चार, पांच-पांच की संख्या में एक के बाद दूसरा जत्था निकल पड़ता। 'वाहि गुरु जी की फतेह' का जयकारा लगाकर विकराल काल का रूप धर शत्रु को भारी क्षति पहुंचाता।

इस तरह गुरुजी के बीस सैनिक शहीद हो गए। तब साहिबजादा अजीत सिंह ने गुरु जी से विनती की- ''पूज्य पिताजी! इस समय द्वार की रक्षा अति आवश्यक है। मुझे आज्ञा दीजिए कि बाहर निकल कर इसकी रक्षा करूँ। मृत्यु का आलिंगन भी करना पड़ा तो क्या चिन्ता है? मैं इन दुष्टों को अवश्य ही मजा चखाऊंगा।''

अजीत की आयु इस समय अठ्ठारह वर्ष से कम ही थी (जन्म ७ जनवरी, १६८७ ई.)। गुरु जी भली भांति जानते थे कि उनके पुत्र की इस इच्छा का क्या परिणाम होगा। किन्तु उनके सामने प्रश्न था कि पहले भी जो योद्धा युद्ध में लड़ते-लड़ते शहीद हुए थे, वे भी क्या उनके पुत्र न थे? बस इस विचार के आते ही उनके मन मस्तिष्क ने पुत्र-मोह पर विजय प्राप्त कर ली। उनकी आंखों में हर्ष की अनुपमा आभा चमक उठी। उन्होंने अजीत को छाती से लगा लिया। अपने हाथों में उसे कवच व शस्त्रास्त्र से सज्जित किया। फिर उसे शत्रु से दो-दो हाथ करने की

अनुमति दे दी।

अजीत ने पांच योद्धाओं के साथ गढ़ी से बाहर कदम रखा। शत्रु पर तीरों की जोरदार बौछार शुरु कर दी। कितने ही मुगल सैनिक घायल होकर अपने घोड़ों सहित भूमि पर आ गिरे। परन्तु शीघ्र ही उसके बाण समाप्त हो गए। इधर शत्रु दल का प्रहार भी तीव्र से तीव्रतर होने लगा। जबरदस्त खां ने स्वयं आगे बढ़कर तीर चलाने शुरु कर दिए। इस पर साहिबजादे ने अपना भाला संभाला और शत्रुओं को यमलोक पहुंचाता हुआ जबरदस्त खां की ओर बढने लगा। उसे देखकर महाभारत के वीर अभिमन्यु की याद ताजा हो जाती थी, जो बालक होते हुए

भी कौरव दल के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए रणक्षेत्र में निकल पड़ा था और बड़ों-बड़ों के छक्के छुड़ा दिए थे कि मुस्लिम सैनिकों को सामने आने का साहस ही न हो रहा था।

युद्ध करता-करता अजीत सिंह अपने साथियों सहित घायल हो गया किन्तु घावों की जरा भी चिंता न करते हुए उसने युद्ध जारी रखा। उसका भाला एक मुस्लिम सैनिक के लौह कवच में फंस गया। अजीत ने उसे निकालने का यत्न किया तो वह टूट गया। तब उसने अपनी तलवार निकाल ली और पुनः मारकाट शुरु कर दी। उसने कई यवन सरदारों को हमेशा की नींद सुला दिया।

जबरदस्त खां ने जब यह देखा कि अकेला गुरु पुत्र अनेकों को गाजर मूली की तरह काटता चला जा रहा है तो अपने सैनिकों को ललकार कर बोला- ''पकड़ो इसे! देखते क्या हो? एक मामूली सा लड़का तुम से काबू नहीं होता?''

यवन सैनिकों ने अपने नायक की फटकार सुनी तो उन्होंने आवेश में आकर घोड़ों का एक चक्रव्यूह बनाया और अजीत को घेर लिया। उस पर और उसके साथियों पर तीरों की इतनी वर्षा की कि वे सब ढँक से गए। वीर सिंहों ने एक साथ जोर का नारा लगाया- ''वाहि गुरु जी की फतेह'' और एक साथ कई शत्रुओं के रुण्ड-मुण्ड भूमि पर लुढ़क गए। पर उस अथाह सैन्य-सागर में छः व्यक्ति भला कब तक युद्ध करते। अन्त में वीर अभिमन्यु की तरह लड़ता हुआ अजीत सिंह अपने साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हो गया।

गुरु जी हवेली की छत पर से पुत्र का रण कौशल देख रहे थे। उन्होंने उसे घायल होते देखा। फिर शान से गिरते भी देखा। पुत्र द्वारा प्रकट की गई वीरता तथा अद्वितीय रण-चातुर्य देखकर उनका माथा गर्व से उन्नत हो गया। उनके मुख से निकला- ''धन्य हो बेटा! तेरी ख्याति अमर रहेगी। तेरा बलिदान भारत माता के पुत्रों में अतुलित पौरुष का संचार कर उन्हें शत्रु-रक्त से स्नान करने की अमर प्रेरणा देता रहेगा।'' उन्होंने अकाल पुरुष का धन्यवाद किया कि उसकी असीम कृपा से बालक अजीत ने एक महान सैनिक की भांति वीरगति प्राप्त कर जहां देश और जाति के नाम को रोशन किया है, वहां वह अपना नाम भी अमर कर गया है।

गुरु जी का दूसरा पुत्र जुझार सिंह अपने बड़े भाई को शत्रु से लोहा लेते देख रहा था। उसने उसे वीरगति प्राप्त करते देखा। उसका खून खौल उठा। रहा न गया। तुरंत ही वह भी पिता के सामने हाथ बांधकर खड़ा था।

''पूज्य पिताश्री! अब मुझ भी आज्ञा दीजिए, उसने मुट्ठियाँ भींचते हुए निवेदन किया- ''मैं भाई के खून का बदला लूंगा। मुझे भी अपने करतब दिखाने का अवसर

प्रदान कीजिए। मेरी प्रबल इच्छ है कि शत्रु–रक्त से होली खेलूं। यह सोचकर मुझे तुच्छ मत आंकिए कि मैं छोटा हूं। मैं जुझार हूं। पिताजी! यही मेरा मन्तव्य है विश्वास कीजिए, मैं युद्ध में पीठ नहीं दिखाऊंगा।''

जुझार की आयु इस समय लगभग सोलह वर्ष (जन्मः मार्च १६८९)। राजर्षि गुरु गोविन्द सिंह को उसके इन वीरोचित शब्दों से अति प्रसन्नता हुई। उन्होंने उसे चूमा, थपकी दी और हाथ में ढाल–तलवार थमा दी।

''जाओ प्यारे बेटे?'' उन्होंने बालक का उत्साह बढ़ाते हुए कहा– ''मुझे तुम जैसे वीर पुत्र पर गर्व है। जाओ, वांछित कर्तव्य की पूर्ति हेतु समर भूमि को सुशोभित करो।''

जुझार पिता के चरण छूकर जाने लगा। उसे काफी देर से प्यास लगी हुई थी। उसने एक सैनिक से थोड़ा पानी पिलाने के लिए कहा। गुरु जी ने यह सुना तो बोले– ''पुत्र, अब पानी, नहीं, जाकर आक्रमणकारी यवनों का खून पियों। उसी से अपनी प्यास बुझाओ। तुम्हारी यह तलवार भी तो शत्रु–शोणित की ही प्यासी है।''

पिता के प्रेरणादायक शब्दों ने बालक की निश्चय शक्ति को और अधिक बलवती बना दिया। वह पांच सिख सैनिकों के साथ युद्ध क्षेत्र में कूद गया। उसकी तलवार बिजली की तरह चमक रही थी। देखते ही देखते उसने चार–पांच यवन सरदारों को मार गिराया। वह अपना मार्ग इस प्रकार बनाता चला जा रहा था। जैसे किसी नदी में कोई मगरमच्छ अपनी राह बनाता हुआ आगे बढ रहा हो। अपनी अत्यधिक हानि होती देखकर शाही सैनिकों ने क्रोधावेश में सिंह–शावक को घेर लिया। चारों ओर से 'मारो–मारो' की ललकार हुई। वीर जुझार पर एक साथ कई प्रहार होने लगे। एक यवन सैनिक ने आगे बढ़कर उसकी एक भुजा पर जोर का प्रहार किया। फिर भी वीर जुझार यथापूर्व लड़ता ही रहा।

दूसरी चोट उसके दूसरे कंधे पर पड़ी। फिर मस्तक, जंघा और सीने पर खचाखच वार हुए। वीर बालक ने गिरते–गिरते 'सत श्री अकाल' की गर्जना की और इसके साथ ही चमकौर के इस युद्ध में एक और अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हो गया।

गुरु जी यह सारा दृश्य देख रहे थे। अजीत के बाद इस अपने दूसरे पुत्र को भी उन्होंने बलिदान होते देखा। प्रभु का स्मरण करते हुए बोले–''तेरी अमानत तुझे समर्पित। आज मेरा और इन दोनों बालकों का जीवन सफल हुआ। किन्तु हे प्रभु! अभी बहुत काम शेष है। अपने इस सेवक को अधिक शक्ति दे ताकि इस दुष्ट, दुराचारी तथा आक्रमणकारी यवन समूह को निर्मूल कर सकूं।''

इसमें संदेह नहीं कि गुरु जी पर विपत्ति पर विपत्ति पड़ रही थी। तो भी वे अनेक असह्य कष्टों में स्थिर–चित्त रहे। वीरग्रगण्य गुरु जी के नेत्रों में कभी जल नहीं देखा गया। वे कभी भी निरुत्साहित नहीं हुए। सदैव संघर्षशील रहे। पुत्रों के बलिदान के पश्चात् उन्होंने अपनी भी आहुति देने का निश्चय किया। परन्तु शेष बचे पांच सिखों ने निवेदन किया–''आपको तो हर हालात में किसी न किसी प्रकार जीवित रहना चाहिए ताकि देश–धर्म की रक्षा का जो यज्ञ आपने शुरु किया है, वह अखण्ड रीति से चलता रहे। आप जीवित रहेंगे तो आपके चरणों के सहारे हमारे जैसे हजारों शिष्य पैदा हो जाएंगे। पर आप यदि बलिदान हो गए तो मुस्लिम सेना फूली नहीं समाएगी। अतः आपका यहां से सुरक्षित निकल जाना ही हमारी विजय है।''

उन्होंने गुरु जी को अपनी बात मानने के लिए विवश कर दिया। अतः आधी रात के समय गुरु जी उनमें से तीन सिखों के साथ बाहर निकले और माछीवाड़ा के जंगल की ओर बढ़ गए।

प्रातःकाल शाही सेना गढ़ी में दाखिल हुई। वहां टिके हुए दोनों योद्धाओं ने मृत्यु पर्यन्त घोर प्रतिरोध किया। भाई संता सिंह ने गुरु गोविन्दसिंह जी सा वेश बना रखा था। शत्रु सैनिकों ने उसे ही गुरु गोविन्द सिंह समझा। वे उसके शव का सिर काट कर ले गए और खुशियां मनाने लगे। लेकिन सेनापति वजीर खां पर सारा भेद खुलते देर न लगी। बेचारा मुँह लटका कर बोला– ''हिन्दुओं का पीर पुनः बच निकला।''

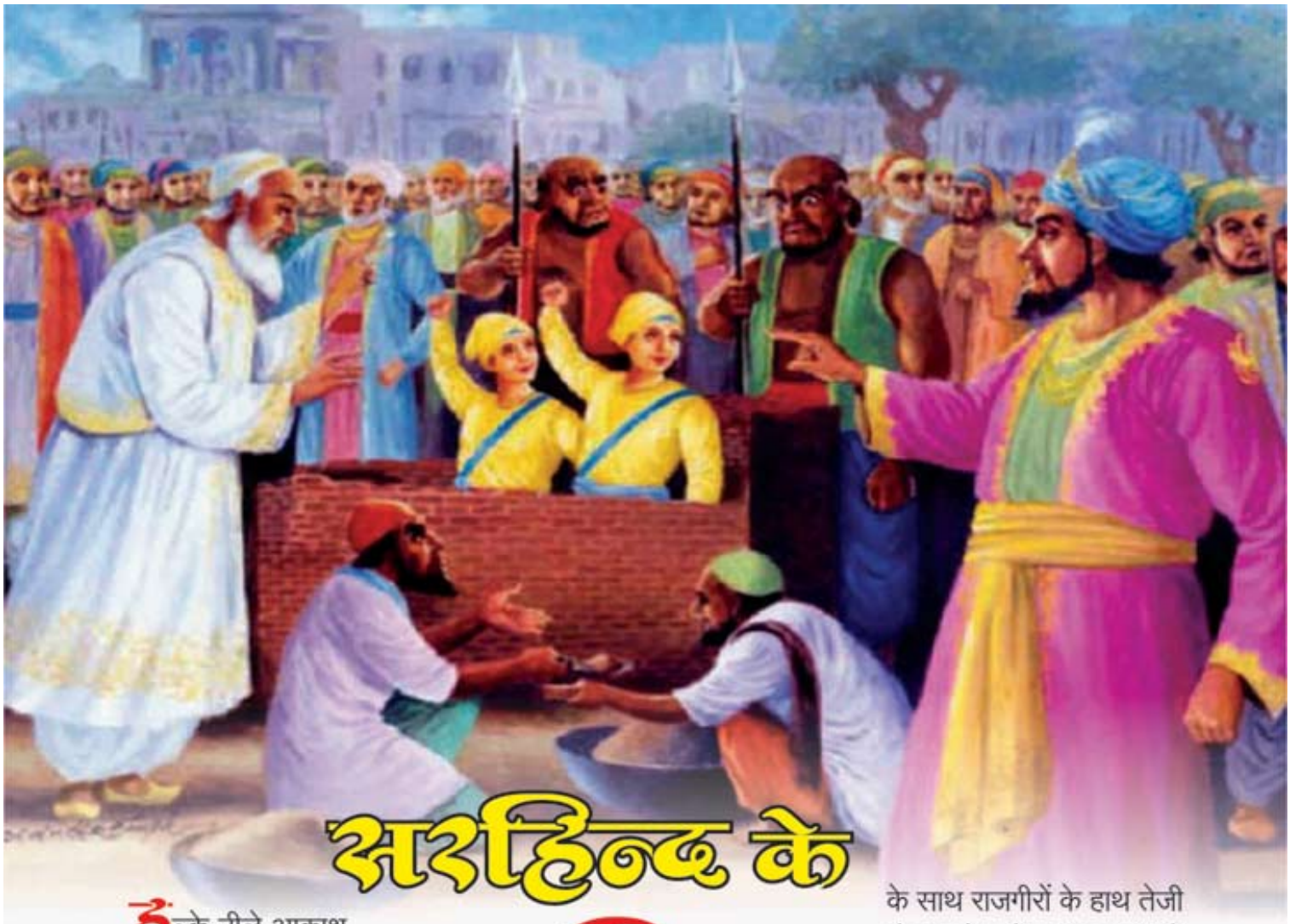

सरहिन्द के शहीद

मदनलाल बिरमानी

हल्के नीले आकाश पर चमकते सूर्य देवता इस दर्दनाक दृश्य को साश्चर्य एकटक निहार रहे थे। पांच सौ करोड़ वर्ष की अपनी लम्बी आयु में उन्होंने मानव की नृशंस क्रूरता के कितने ही घिनावने दृश्य देखे थे, किन्तु इस प्रकार दो प्यारे-प्यारे मासूम व भोले-भाले बच्चों को दीवार में चुने जाने का वीभत्स दृश्य उनके लिए बिल्कुल नया ही था। इंसानों के वेश में घूमने वाले हिंसक पशुओं का नया कारनामा था यह।

दुष्टता के धनी, सरहिन्द के नवाब वजीर खां के हुक्म पर मजदूर आये। पाषाण हृदय राजगीर बुलाए गए। गधों पर ईंटें लादकर लायी गईं। गारा तैयार किया गया। दो निर्दोष बालकों के गिर्द ईंटे चुनी जाने लगीं। चूने और गारे के साथ राजगीरों के हाथ तेजी से चलने लगे। दीवार उभरने लगी।

''अब भी वक्त है।'' नवाब वजीर खाँ हर १५-२० मिनट बाद कहता, ''इस्लाम कबूल कर लो। सिर्फ कलमा पढ़ने मात्र से ही तुम्हारी जान बच सकती है।''

''नहीं, नहीं। सौ बार नहीं, दोनों बच्चे एक स्वर में पुकार उठते- ''धर्म की तो सच्ची आत्मा है। वह आत्मा निकल गई तो फिर लाशें ही शेष रह जाएंगी। ऐसी लाशें ढोने से क्या लाभ?''

दोनों के सिर उन्नत थे। निर्भयता, दृढ़ता और तेज बिखेरते चेहरों पर छायी थी मीठी मुस्कान की आभा, मानों दुष्टों की दुष्टता में भी आनन्द लाभ कर रहे हों।

ईंटें उठ रही थीं। ऊपर, और ऊपर। दीवार उनकी

कमर को छूने लगी, फिर छाती तक आ गई और उसके बाद कंधों तक उभर आई। बस कुछ ईंटें और, और उसके बाद खेल खत्म हो जाएगा।

''मुसलमान होना स्वीकार कर लो। अभी भी तुम दोनों की जान बच सकती है। वजीर खां कड़का।

''नहीं कदापि नहीं। जैसा जीवन तुम हमें देना चाहते हो, उससे यह मौत हजार दर्जे अच्छी है।'' बच्चों ने गर्जना की।

यह घटना २७ दिसम्बर १७०४ ई. की है। इससे कुछ ही दिन पूर्व २१ दिसम्बर की रात्रि को गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपनी बची हुई सेना और परिवार सहित आनन्दपुर छोड़ा था। वे अभी सरसा नदी के तट पर ही पहुंचे थे कि पीछे से सरहिन्द के शैतान–प्रकृति नवाब वजीर खां और लाहौर के नवाब जबरदस्त खां की संयुक्त सेनाओं ने औरंगजेब के हुक्म के अनुसार अपनी सभी सौगन्धों को तोड़कर आ घेरा। वर्षा और शीत युक्त अर्ध रात्रि में नदि के किनारे घोर युद्ध हुआ। नदी पार करने के पश्चात अस्त–व्यस्तता में सारा परिवार बिखर गया। गुरु जी तो अपने साथ चालीस शिष्यों तथा दो बड़े साहिबजादों अजीत और जुझार के साथ चमकौर की गढ़ी की ओर बढ़ गए, जबकि दो छोटे साहिबजादे जोरावर सिंह (९ वर्ष) और फतेहसिंह (७ वर्ष) अपनी दादी माता गुजरी सहित बाकी लोगों से बिछुड़ गए।

२२दिसम्बर, १७०४ ई. प्रातःकाल की शरीर को कँपा रही सर्दी में जिधर भाग्य ले चला, वे चल पड़े। कुछ ही रास्ता तय किया था कि एक पुराना नौकर गंगू मिल गया। उसका गांव खेड़ी पास ही था। उसने उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से अपने घर चलने को कहा। माता जी ने हां कर दी और उसके साथ चल पड़ीं।

गंगू ने उन्हें घर के पीछे के कमरे में ठहराया ताकि गांव को उनके विषय में कुछ भी पता नहीं चले। किन्तु शीघ्र ही लालच ने उसकी नीयत खराब कर दी। उसने उनकी वह गठरी चुरा ली, जिसमें कुछ कीमती वस्तुएं तथा धन था। माता जी ने जागने पर वह गठरी लापता पाई। उन्होंने उससे पूछा तो वह उल्टा ही बरस पड़ा– ''माता जी, आप मुझे चोर समझती है? मेरी सेवा का क्या यही पुरस्कार है? मैंने आपको सुरक्षा प्रदान करके भारी जोखिम उठाने में भी संकोच न किया। और इस सभी के लिए मुझ पर चोरी का दोषारोपण करके क्या यही मुआवजा आप मुझे दे रही हैं?''

लालच में उसकी बुद्धि पर पर्दा डाल दिया था। फिर भय ने भी आ घेरा तो उसने माता जी तथा दोनों साहिबजादों के अपने घर पर होने की सूचना स्वयं मुस्लिम अधिकारियों को दे दी। नवाब वजीर खां गुरु जी के चमकौर दुर्ग से सुरक्षित निकल जाने के कारण काफी खीझा हुआ था। अब माता गुजरी तथा दोनों गुरु पुत्रों को अपने काबू में आया देख कर फूला न समाया। उसकी बाँछें खिल गईं। उसने उन्हें किला के एक बुर्ज में बंद कर दिया, जहां उन्हें वह ठंडी रात कठोर नंगे फर्श पर ही बितानी पड़ी।

अगले दिन वजीर खां ने बच्चों को अपने सामने पेश किए जाने का आदेश दिया। माता जी बच्चों को अपने से अलग न करना चाहती थी, किन्तु दोनों भाइयों में से बड़ा जोरावर सिंह बोला–'' दादी जी, मुस्लिम शासक सदा से ही हमारे शत्रु रहे हैं। पर अब हम उनकी मुट्ठी में हैं। अतः आप हमें जाने दें और नवाब का सामना करने दें।''

इस पर माता जी ने दोनों बच्चों को विदा करते हुए कहा–''जाओ, मेरे अनमोल हीरो! अपने दादा और पिता के सिद्धान्तों का मान रखना। ऐसा कुछ भी न करना जिससे पूर्वजों की कीर्ति को बट्टा लगे। प्रभु तुम्हारी रक्षा करें।''

दोनों भाई नवाब के सामने पहुंचे। दरबार में वे सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गए। उनके सुन्दर शांत मुखड़े निर्भयता की प्रतिमूर्ति थे। उनसे कहा गया कि वे सिर झुकाकर सलाम करें।

''नहीं,'' बड़ा साहिबजादा जोरावर बोला– ''यह सिर भगवान, और गुरु के सिवा और किसी के आगे नहीं

झुक सकता। नवाब के सामने भी नहीं।''

इस अनपेक्षित उत्तर को सुनकर सभी चकित रह गए। नवाब ने समझाना शुरु किया– ''नादान बच्चों! तुम्हें मालूम नहीं किन्तु तुम्हारा बाप और दो बड़े भाई चमकौर में मारे जा चुके हैं। काफिरों का यही अंजाम होता है। तुम दोनों इस लिहाज से खुशकिस्मत हो कि इस्लामी दरबार में लाए गए हो। बस इस्लाम कबूल कर लो। ऐसा करने से तुम्हें माल–ओ–जर, रुतबा और भरपूर इज्जत मिलेगी। बड़े होने पर तुम्हारी शादी मुअजिज खानदानों की हसीन लड़कियों से कर दी जाएगी। ऐश–ओ–इशरत की जिन्दगी बसर करोगे। शहंशाह औरंगजेब तुम्हें इज्जत बख्शेंगे। पर साथ ही याद रखो, अगर तुम हमारी इस फराख दिलाना पेशकश को मानने से इन्कार करोगे तो तुम्हारे साथ भी काफिरों सा सलूक होगा। तुम्हें अजीयतें (यातनाएँ) देकर मार डाला जाएगा।

जोरावर ने अपने छोटे भाई की ओर देखा और धीरे से कहा– ''भाई ! प्राण न्यौछावर करने का समय आ गया लगता है। तुम्हारा क्या ख्याल है? हमारा क्या उत्तर होना चाहिए?''

''प्यारे भाई! दादी जी ने बताया था न कि हमारे दादा जी ने किस प्रकार अपना सिर दे दिया किन्तु मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया।'' फतेह सिंह ने उत्तर देते हुए कहा–''हमें उनके आदर्श का पालन करना चाहिए। मृत्यु से क्या भय? धर्म के लिए प्राणों की आहुति दे देना तो गौरव की बात है। मैं मरने को तैयार हूं।''

छोटे भाई के यह वीरोचित उद्‌गार सुनकर जोरावर सिंह को अति प्रसन्नता हुई। वह बोला– ''तुम्हारा विचार उचित है। हमें कुल की प्रतिष्ठा पर आंच नहीं आने देनी है। हमारी रगों में गुरु अर्जुन देव, गुरु हरि गोविन्द, पितामह गुरु तेग बहादुर और पिता गोविन्द सिंह जी का खून दौड़ रहा है। हम उनके वंशज हैं। अपने वंश के लिए अशोभनीय, ऐसा कोई भी कार्य हम नहीं कर सकते।''

फिर जोरावर ने ऊँची आवाज में कहा–''ओ नवाब! तुम धोखेबाज हो। तुम कहते हो कि हमारे पिताजी युद्ध में काम आए हैं। यह असत्य है। वे जीवित हैं। उन्हें सभी संसार में बहुत कुछ करना है। तुम्हारे शासन की जड़ें हिलानी हैं। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम उस वीर पिता की सन्तान हैं, जिसने मेरी ही आयु में अपने पूज्य पिता को बलिदान के लिए स्वयं दिल्ली भेजा था। हम तुम्हारे मजहब को रद्द करते हैं, उससे घृणा करते हैं क्योंकि वह तुम्हें जंगली जानवरों की तरह हिंसात्मक कर्म करने की प्रेरणा देता है। नहीं चाहिए हमें तुम्हारा ऐश्वर्य और सम्मान। हम प्राणों का परित्याग कर सकते हैं। धर्म का नहीं। यही हमारी हिन्दू परम्परा है। तुम जो जी में आए करो।''

सारा दरबार बच्चे के इन निर्भीक शब्दों को सुनकर दंग रह गया। स्वयं नवाब को भी आश्यर्च हुआ। पर उसने सोचा, बच्चे ही तो हैं, डराने–धमकाने से मान जाएंगे। अतः उस दिन उसने उन्हें बुर्ज में वापिस भेज दिया। किन्तु दूसरे दिन भी जब उन्हें पुनः बुलाकर धमकाया गया तो भी वे चट्टान की तरह अडिग थे। तब दोनों को अलग–अलग ले जाकर बरगलाने की कोशिश की गई, अनेक प्रलोभन दिए गए किन्तु वे टस से मस न हुए। '' सोचने के लिए एक दिन की और मोहलत देता हूँ।'' ऐसा कहकर बालकों पर और दबाव डालने के लिए नवाब ने उन्हें पुनः ठंडे बुर्ज में ठिठुरने के लिए भेज दिया।

तीसरे दिन पुनः उन्हें दरबार में बुलाया गया। फिर वहीं धमकियाँ, वहीं प्रलोभन, किन्तु सिंह शावकों पर न कोई प्रभाव होना था, न हुआ। तब नवाब ने अपना स्वर

बदला। नीति से काम लेते हुए बड़े प्यार का दम भरते हुए बड़ी नरम भाषा में ऐसे बोला जैसे संसार में उससे बढ़कर कोई कृपालु हो ही नहीं– '' प्यारे बच्चो, तुम्हें सजाए–मौत देने में हम बहुत हिचकिचा रहे हैं। तुम्हारा मुखड़ा इतना सुन्दर तथा कोमल है कि हमें बड़ा प्यार आ रहा है। किन्तु तुम दोनों बेवकूफी से काम ले रहे हो। हमें तुम पर रहम आ रहा है। अच्छा यह तो बताओ कि अगर हम तुम्हें छोड़ दें तो तुम क्या करोगे?''

निर्भय वीर बालकों ने एक ही स्वर में उत्तर दिया– ''हम सेना इकट्ठी करेंगे और तुम जैसे अन्यायी के साथ युद्ध करेंगे।''

''निश्चय जानो'' – बालक ने उत्तर दिया। हम पुनः सेना एकत्र करेंगे और तुम्हारे साथ पुनः युद्ध करेंगे।''

यह सुनते ही नवाब की कपटपूर्ण वाणी जाती रही। उसका असली रूप पुनः सामने आया । बोला– ''तुम्हारे साथ वही सलूक होगा, जो एक गुस्ताख काफिर के साथ होना चाहिए। तुम्हें हम दीवार में जिन्दा चुनवा देंगे।''

नवाब की इस बात का अनुमोदन वहां उपस्थित काजी ने किया, ''ऐसा ही होना चाहिए, हुजुर। इस्लाम या मौत। इन दोनों में से एक को ही चुना जा सकता है।''

नवाब ने किले की बाहरी दीवार का एक भाग गिराने का आदेश दिया। फिर उस दरार में दोनों बच्चों को खड़ा कर दिया गया। और उनके गिर्द दीवार चुनी जाने लगी। नवाब का हुक्म था कि बच्चों के शरीर के साथ ईंटें अच्छी तरह से दबारकर और कसकर रखी जाएं। काजी अपने हाथ में कुरान की पुस्तक लिए खड़ा हो गया। ईंटों के चढते हुए रदे के साथ बच्चों को मुसलमान बन जाने का परामर्श देने लगा। किन्तु दोनों की ओर से एक ही उत्तर मिलता–''हम जान तो दे सकते हैं, इस्लाम कबूल नहीं कर सकते।''

चढ़ती हुई दीवार अब फतेह सिंह को पूरी तरह अपने अन्दर समा लेने को थी। उसने बड़े भाई के अन्तिम दर्शनों के लिए आंखें उठाईं। देखा, जोरावर की आंखों में आंसू हैं।

''भैया, यह मैं क्या देख रहा हूं? आप रो रहे हो?''

जोरावर की आंखों से सचमुच ही आंसू टपक पड़े। उसके दोनों हाथ दीवार में चुने जा चुके थे। आंसू पोछ भी न सकता था। बोला–''हाँ, हाँ रो रहा हूं। इसलिए कि तू मुझसे छोटा है पर धर्म पर बलिदान होने में मुझ से पहले बाजी मार रहा है और मेरा कुछ भी बस नहीं चल रहा। ईश्वर ने मुझे तुमसे पहले पैदा किया। किन्तु शहीद तुम मुझसे पहले हो रहे हो।''

नवाब, जिसने जोरावर की आंखों में आंसू देखकर यह समझा था कि बालक पर उसका जादू चल गया है, यह बात सुनते ही क्रोधाग्नि से जल उठा। बोला–''उफ् बला के अड़ियल छोकरे हैं। अपनी जान की भी परवाह नहीं इन्हें। उल्टा मौत को गले लगाने के शौक में एक दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहते हैं।''

फतेहसिंह भाई के उत्तर से संतुष्ट होकर विजयी भाव से मुस्करा भर दिया। देखते ही देखते उसका सिर दीवार के अन्दर समा गया। फिर कुछ ही देर बाद जोरावर का माथा भी दीवार के भीतर था। भारत माता के दोनों नौनिहाल संसार की नजरों से ओझल हो गए। मात्र कल्पना ही की जा सकती है कि किस प्रकार उन निरीह बालकों के श्वासोच्छवास बंद हो जाने के कारण शरीर बैचेनी से छटपटाना तो चाहे होंगे, पर दीवार में कस दिए जाने के कारण हाय, छटपट भी न सके होंगे। प्राण पखेरु न जाने किस प्रकार कष्ट पूर्वक उड़े होंगे। निर्दय वजीर खां ने निष्ठुरता की सभी सीमाएँ लांघ डालीं।

भारत भूमि में जहाँ वीर पुत्रों की कमी नहीं रही, वहाँ वीरों के लिए अपना धन न्यौछावर करने वालों का भी अपना स्थान रहा है। सरहिन्द के निवासी सेठ टोडर मल को पता चला कि गुरु गोविन्द सिंह की माता जी तथा दोनों छोटे साहिबजादे नवाब की कैद में हैं, तो वह अपने साथ अशर्फियों से भरा थैला लेकर नवाब के दरबार की ओर लपका। उसकी इच्छा थी कि नवाब को पर्याप्त धन देकर उन्हें छुड़ा लिया जाए। किन्तु जब तक बहुत देर हो चुकी थी। दोनों बच्चे दीवार में चुनवा दिए जा चुके थे। वह

उस स्थान पर गया हाथ जोड़, शीश झुकाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। फिर माता गुजरी की ओर चल दिया। माता जी को अभी अपने लाड़ले पोतों के विषय में कुछ भी ज्ञात न था। वह उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उनकी कुशलता के लिए भगवान से प्रार्थनाएं कर रही थीं।

टोडरमल ने बोलना चाहा। किन्तु वाणी साथ न दे रही थी। उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। उसकी इस अवस्था को देखकर माता जी का माथा ठनका। वह शंकित हो उठीं। बोलीं– ''क्या बात है, सच–सच बताओ। मेरे पोते सकुशल तो हैं। कहीं अपने प्राणों के मोह में उन्होंने कलमा तो नहीं पढ़ लिया? यदि ऐसा कुछ हुआ है तो बताओ मैं भी तुम्हारे साथ रोऊंगी और यदि वे धर्म पर दृढ़ रहते हुए शहीद हो गए हैं तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और मैं भी खुशी–खुशी उनके पीछे परलोक सिधार सकूंगी।''

आंसूभरी आँखों और रुधे गले से टोडरमल ने साहिबजादों की बालिदान की गाथा कह सुनाई।

''बहुत अच्छा। तो मेरे पोते अपने दादा से मिलने के लिए जा चुके हैं। मेरे लाड़लों, मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैंने तुम्हारी देखरेख का जिम्मा लिया था। किन्तु तुम दोनों चले गए, अब मैं यहां रहकर क्या करूंगी? ओ मेरी आत्मा! प्रभु के चरण–कमलों में उनके पीछे उड़ चल।''

ऐसा कहते हुए माता जी ने अपने नेत्र बंद कर लिए और 'वाहि गुरु', 'वाहि गुरु' उच्चारण करने लगीं। शीघ्र ही परलोकगामी हो गईं।

टोडरमल ने दुःख–संतप्त हृदय से माताजी के चरणों में प्रणाम किया। वह नवाब के पास गया और तीनों मृतकों के क्रियाकर्म की अनुमति मांगी। नवाब बोला– ''तुम ऐसा कर सकते हो। पर क्रियाकर्म के लिए तुम्हें जो भूमि चाहिए होगी, उसकी कीमत तुम्हें चुकानी होगी। जितनी भूमि चाहिए, उस पर सोने की मुहरें बिछा दो और भूमि ले लो।''

टोडरमल ने उपयुक्त स्थान का चयन किया। पूरी जमीन पर सोने की मुहरें बिछा दीं। दीवार में चुने गए बाल शहीदों के मृत देह निकलवाये। बुर्ज से माता गूजरी का शरीर भी लाया गया। खरीदी गई भूमि पर उन तीनों का विधिवत दाह संस्कार किया गया।

गुरु गोविन्द सिंह जी को यह सब समाचार रायकोट में मिला। उन्होंने एक गहरा सांस लिया और बोले– ''वे ईश्वर की अमानत थे। उसी के पास चले गए। मेरे लिए यही चार पुत्र न थे। अन्य सभी शिष्य भी तो मेरे ही पुत्र हैं।

इन पुत्रन के शीश पर वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ जीवित कई हजार।।

''ऐ मेरे जिगर के टुकड़ो! अजीत, जुझार! जोरावर और फतेह! तुम्हारा बलिदान अवश्य रंग लाएगा। दुष्ट यवनों की सत्ता शीघ्र ही जड़ सहित उखड़ कर रहेगी।''

जहां दोनों साहिबजादे जिन्दा दीवार में चुने गए, वहां अब गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब है। जिस स्थान पर तीनों शरीरों का दाह संस्कार किया गया, वहां बाद में गुरुद्वारा ज्योति स्वरूप का निर्माण किया गया। नजदीक का वह बुर्ज, जहां तीनों को कैद रखा गया था और जहां माता गुजरी ने प्राण त्यागे, आज एक गुरुद्वारा 'माता गुजरी का बुर्ज' विद्यमान है।

सरहिन्द में हर वर्ष साहेबजादों के बलिदान की स्मृति में मेला लगता है, जो 'शहीद जोड़ मेला' के नाम से प्रसिद्ध है। यह मेला प्रतिवर्ष २५, २६ और २७ दिसम्बर को मनाया जाता है।

जो हमने कर दिखाया

कृष्णकुमार अष्ठाना

गत कुछ दिनों में दो घटनाक्रम ऐसे हुए, जिससे हमारा स्वाभिमान जागा, आत्म विश्वास बढ़ा और हमारे देश के आम नागरिक को भी लगा कि हम कहीं पिछड़े हुए नहीं हैं। हमारा जीवनोद्देश्य है- उसी को लेकर हम जी रहे हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' हमारे लिए नारा नहीं है। हमने मूल्य चुकाकर इसे जिया है।

पाकिस्तान का निर्माण और उसके साथ हमारा अभी तक का व्यवहार इस बात का साक्षी है कि हमने उसे अपना ही एक बिगड़ा हुआ भाई या उत्तम पड़ोसी के रूप में ही माना और सोचते रहे कि उसे कभी तो समझ आएगी ही, किन्तु अपनी आक्रामकता के बाद भी हमारे शांत बने रहने को उसने हमारी कमजोरी समझा और वह विगत ७० वर्षों में अनेक बार अपनी मर्यादाएं, सीमाए लांघता रहा। यह जानते हुए भी कि हमारे साथ युद्ध में वह हर बार हारा है उसे समझ नहीं आई। बांग्लादेश के साथ युद्ध (सन् १९७१) में पराजय के बाद अपने हजारों सैनिकों के साथ समर्पण ने भी उसे सद्बुद्धि नहीं दी और न कारगिल पराजय से उसने सबक सीखा।

अब जब एक घटनाक्रम में भारत के जाबांज जवानों ने 'एक लुहार की' कहावत के चरितार्थ करके कुछ घण्टों में ही उसके होश उड़ा दिए। तब उसको शायद पहली बार अनुमान हुआ कि उसके मुकाबले में हमारी ताकत क्या है? घटनाक्रम था 'सर्जिकल स्ट्राइक' खूब पढ़ा और सुना होगा आपने इसलिए उसके संबंध में ज्यादा नहीं बता रहा। सर्जिकल स्ट्राइक यानी एक ऐसा अभिमान जिसके अतंर्गत मध्यरात्रि के बाद कुछ ही घण्टों में भारतीय सैनिकों ने पाक की सीमा में घुसकर अनेक आंतकियों को भून डाला और उनके आशियाने उजाड़ दिए।

याद हो आई श्री कृष्ण सरल जी की वे पंक्ति -

कौन कहता है अहिंसा भीरूता का आवरण हैं?
कौन कहता है समर में हम न लड़ना जानते है?
विश्व के इतिहास में अध्याय तुम पढ़ लो हमारा।
चमकते स्वर्णाक्षरों में लिखा भारतवर्ष होगा।
एक पन्ने पर अहिंसा की लिखी वाणी मिलेगी
दूसरे पर दमकते शौर्य का इतिहास होगा।

विश्व इतिहास में सर्जिकल स्ट्राइक का पृष्ठ ऐसा ही लिखा जाएगा।

और एक ऐसे ही दूसरे घटनाक्रम में अपने दूसरे शक्तिशाली पड़ौसी को झकझोर दिया है इन दिनों अपने देशवासियों ने। आपकी भी तो बड़ी भूमिका है उसमें। याद आ रहा है वह घटनाक्रम? वह हैं चीनी माल का बहिष्कार। शत्रु राष्ट्र के उत्पादन सस्ते और आकर्षक भले ही लगते हों किन्तु उन्हेंने हमारी अर्थ व्यवस्था को चौपट करने के साथ ही हमारे स्वाभिमान को भी आहत किया है इसलिए अब नहीं स्वीकारेंगे उसे इस आह्वान के साथ देश खड़ा हो रहा है।

विलम्ब से ही सही आंख तो खोली अपने राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों ने-

जिनको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं पशु है निरे और मृतक समान हैं।

(साभारः वीणा मासिक)

(जन्मशताब्दी पर विशेष)

बच्चों के प्रिय कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

डॉ. उषा यादव

बच्चों के लिए लिखना आसान नहीं। बाल मन के भीतर प्रविष्ट होने में सक्षम और बच्चों की भावनाओं को समझने में निष्णात रचनाकार ही सफल बाल साहित्यकार हो सकता है। इन्हीं प्रतिभावान बालसाहित्यकारों में एक नाम द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का है। उन्होंने बच्चों के लिए ढेरों पुस्तकें लिखी। पाठ्यक्रम में संकलित उनकी रचनाओं को पढ़कर कई पीढियों को वयस्क होने का सौभाग्य मिला। उनकी कविताओं का जादू हम बच्चों और बड़ों के सिर पर समान रूप से चढ़कर बोला। हमारे स्वस्थ मनोरंजन, चरित्र निर्माण और ज्ञानवर्द्धन से जुड़ी ये कालजयी कविताएं हिन्दी बाल साहित्य की अक्षयनिधि हैं।

माहेश्वरी जी का जन्म आगरा के निकट रोहता ग्राम में १ दिसम्बर १९१६ को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाव में हुई। इसके बाद आगरा नगर में अध्ययन का क्रम चला। वर्ष १९४२ में आगरा कॉलेज से एम.ए (हिन्दी) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के बाद वर्ष १९४३ में इलाहाबाद से एल.टी. की परीक्षा उतीर्ण की। पहले अध्यापन और फिर राजकीय सेवा में आने के बाद शिक्षा विभाग के विविध पदों पर कार्यरत रहे। १ दिसम्बर १९७४ को सेवानिवृत्ति के बाद साक्षरता निकेतन (लखनऊ) में चार वर्ष तक प्रौढ़ शिक्षा एवं प्रौढ़ साक्षरता के निदेशक के रूप में कार्य किया। वर्ष १९७८ में वहाँ से भी कार्यमुक्त होने के बाद आगरा स्थित अपने निवास में सपरिवार जीवन यापन करते हुए २९ अगस्त १९९८ में चिरनिद्रा में लीन हो गए। पर नश्वर देह भले ही अग्नि में विलीन हो गई हो, माहेश्वरी जी की कीर्ति आज भी जीवित है और अपने कृतित्व के रूप में वह सदैव अमर रहेंगे।

माहेश्वरी जी के दो दर्जन से अधिक बालकाव्य संग्रहों में बच्चों के लिए लिखी गई प्यारी मनभावन कविताएं संकलित हैं। इन कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता है –माहेश्वरी जी की गुड़िया विषयक निम्न काव्य पंक्तियों की सरलता दृष्टव्य है–

'यह देखो यह मेरी गुड़िया
अम्मा तुमने देखी गुड़िया।
मैं झूले में इसे झुलाती
मंद–मंद स्वर में कुछ गाती
थपकी देकर इसे सुलाती
सपनों में मुसकाती गुड़िया।'

'मुन्नी मुन्नी ओढ़े चुन्नी
गुड़िया खूब सजाई
किस गुड्डे के साथ हुई तय
इसकी आज सगाई।'

'मेरा पिल्ला' कविता की ये पंक्तियां देखिए –

'जब मैं हूं बाहर से आता
मेरे ऊपर चढ़–चढ़ जाता
फूं फूं करता, कूं कूं करता
पंजे रखता, लिपट–झपटता
मेरा पिल्ला मेरा पिल्ला।'

वर्णन शैली की चित्रोपमता से कवि ने यहाँ पिल्ले की विविध गतिविधियों को सजीव बना दिया है। बच्चे के बाहर से आने पर पिल्ला किस तरह उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता है, किस तरह विभिन्न ध्वनियां निकालकर अपना हर्ष प्रकट करता है और किस तरह लिपटना–झपटना–पंजे रखना आदि चेष्टाओं द्वारा बालक के प्रति अपना लगाव प्रकट करता है, इसे यथावत चित्रित करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। पालतू पशु के रूप में पिल्ले को अपने घर में रखने वाले बच्चों ने निश्चय ही इस कविता का भरपूर आनंद उठाया है।

माहेश्वरी जी की बाल कविताओं को जादुई बनाने वाली एक अन्य विशेषता उनकी ध्वन्यात्मकता है। कुत्ते का भौंकना, गाय का रंभाना, बकरी का मिमियाना, कोयल का कुहकना और चिड़ियों का चहचहाना एक शिशु तक में विस्मय जगा देता है। तभी तो माहेश्वरी जी कहते हैं–

यदि कभी बच्चों के मन में झांककर देखा जाए, तो एक पूरी दुनिया सजी मिलेगी। बच्चों के इस संसार में उनके अपने सपने हैं, अपने शौक है, अपनी पसंद–नापसंद है और अपने सुख–दुःख हैं। कहीं वह गुब्बारे के लिए ललक उठता है तो कहीं चांद को देखकर पुलक उठता है और कुछ नहीं, तो रेल का खेल खेलते हुए ही बच्चों को तन्मय देखा जा सकता है।''

'राम रहीम रमेश सुशीला
कमला चुन्नी मुन्नी आओ
एक–एक के पीछे होकर
डिब्बे बनकर सब जुड़ जाओ।'

रेल के इस खेल में मोहन गार्ड बनकर हरी झंडी दिखलाता है और सोहन इंजन बनकर सीटी देकर रेल चलाता है। और फिर –

'छक–छक–छक–छक–छक–छक करती,
धुआं उड़ाती गाड़ी चलती।'.
सचमुच मजेदार है न रेल का खेल।

उनके प्रयाण गीत की निम्म पंक्तियां कितनी उद्‌बोधक है, देखिए–

'वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो
हाथ में ध्वजा रहे, बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं, दल कभी रुके नहीं।'

अपने देश की धरती से अनूठा प्रेम रखने वाले कवि के रूप में भी माहेश्वरी जी अप्रतिम है। उन्हें मालूम है कि हमारा भारत देश बहुत विशाल है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय , भाषा और रीतियों को मानने वाले लोग रहते हैं। पर अनेकता में एकता की विशेषताए के कारण हम भारतीय सदा एक हैं। माहेश्वरी जी की कविताओं में यह प्रेरक स्वर देखिए–

(क)कोटि–कोटि कंठ से, एक स्वर निकल रहा

'एक भारतीय हम, चल रहे मिला कदम।'

(ख) 'हैं कई प्रदेश के, किन्तु एक देश के
विविध रूप-रंग है, भारत के अंग हैं
भारतीय वेश एक है, हम अनेक किंतु एक।'

भारत एक कृषि प्रधान देश है। 'किसान बनूंगा' कविता में एक बच्चे की अभिलाषा देखिए-

'माँ, ला दे हल-बैल मुझे तू
मैं भी एक किसान बनूंगा।
मेरे गेहूं की बालों से
होली का नवपूजन होगा
मेरे आमों की डाली से
कोयल का कल कूजन होगा।
पीली सरसों में बसंत ऋतु
का पीला परिधान बनूंगा।'

उन्होंने आजादी के दीवानों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्राण-पण से संघर्ष करते देखा था। उन्होंने कोटि-कोटि भारतवासियों की आंखों में स्वतंत्रता के बाद देश के नवनिर्माण के सपने भी देखे थे। इसलिए उनकी बाल कविता राष्ट्रीयता के स्वरों की अनुगूंज के साथ देश के नवनिर्माण के स्वर भी समाहित हैं। 'इतने ऊँचे उठो' कविता में वह कहते हैं-

'इतने उँचे उठो कि जितना उठा गगन है।
नये हाथ से वर्तमान का रूप संवारो
नयी तूलिका से चित्रों के रंग उभारो
नये राग को नूतन स्वर दो
भाषा को नूतन अक्षर दो
युग की नयी मूर्ति-रचना में
इतने मौलिक बनो कि जितना स्वयं सृजन है।'

सचमुच माहेश्वरी जी की बाल कविताएं अनूठी हैं। ये कविताएं आप सब बच्चों को मनोरंजन के लोक में ही नहीं ले जातीं, कुछ सोचने और नया गढ़ने के लिए भी प्रेरित करती हैं। वृक्ष और नदी के दृष्टांत द्वारा परोपकार की भावना को कितने सुंदर ढंग से समझाया गया है, देखिए-

'पर हित के लिए देह
धारण करते हैं सज्जन प्राणी
वृक्ष स्वयं न कभी फल खाते
नदियां स्वयं न पीतीं पानी।'

'कौआ और कोयल' में बच्चों को मीठी वाणी बोलने की शिक्षा दी गई है-

'कौआ किसका धन हर लेता
कोयल किसको दे देती है
केवल मीठे बोल सुनाकर
वश में सबको कर लेती है।'

माहेश्वरी जी ने अपनी बाल कविताओं में आप बच्चों को विनम्र बनाने के प्रति विशेष आग्रहशीलता दिखाई है। यदि प्रारंभ से ही बच्चे ईश्वर के समक्ष नमन करना सीख जाए, तो वे विनय भाव को हृदय में धारण कर लेंगे और माता-पिता व गुरु के प्रति भी विनयी बनेंगे। इसीलिए माहेश्वरी जी बच्चों से कहते हैं -

'जिसने हमको/दी है धरती,
दिया गगन है/ उसे नमन है
जिसने हमको/दिए अग्नि-जल,
दिया पवन है/उसे नमन है।'

सचमुच बच्चों के लिए मिसरी-सी मिठी कविताएं लिखकर अमर हो गए हैं प्रख्यात बाल साहित्यकार द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी। १ दिसम्बर २०१६ को उनकी जन्मशताब्दी है। इस अवसर पर हिन्दी बाल साहित्य जगत के साथ हम सब बच्चों की ओर से भी उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि और सादर नमन।

● आगरा (उ.प्र.)

जन्मदिन का उपहार

चित्रकथा - देवांशु वत्स

(३ दिसम्बर : विद्यार्थी दिवस)

ठिंगू मास्टर

कहानी : डॉ. फकीरचंद शुक्ला

इस विद्यालय में आकर तो रजत मानों दुखी ही हो गया था। कक्षा में लगभग सभी विद्यार्थी उसे चिढ़ाते रहते तथा परेशान किया करते। भला इसमें उसका क्या दोष है अगर उसका कद छोटा है तथा रंग भी सांवला है। मगर कक्षा के लड़के प्रायः उसे ठिंगू मास्टर अथवा काला भूंड (काला ततैया) कहकर परेशान करते रहते।

पहले रजत के पिता जी दिल्ली में नौकरी करते थे। वहाँ विद्यालय में कभी किसी ने उसे परेशान नहीं किया था और वह पढाई में भी सबसे आगे था तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़ चढ़कर भाग लिया करता था। लेकिन पिता जी का तबादला होने पर वे इस शहर में आ गए थे और रजत को इस नए विद्यालय में प्रवेश दिलवा दिया था।

मगर इस विद्यालय के विद्यार्थी, विशेषकर उसकी अपनी कक्षा तो शरारती लड़कों से भरी पड़ी थी। एक से बढ़कर एक बिगड़े हुए लड़के थे उसकी कक्षा में। लड़कों का व्यवहार इस कदम अभद्र था कि कोई खुले मन से उसे अपने साथ बेंच पर बैठाने को भी तैयार न था। लेकिन फिर भी रजत को जहां सीट मिल जाती, वह चुपचाप बैठ जाया करता।

उस दिन तो जैसे कमाल हो ही गया था। आधी छुट्टी के समय एक लम्बा चौड़ा लड़का कक्षा में आया था। सारी कक्षा उसे देखकर खड़ी हो गई थी। रजत आश्चर्यचकित हो उसकी ओर देखने लगा कि यह कौन सा महानुभाव आ गया था।

तभी वह लड़का रजत के पास चला आया और बोला– ''यह कौन सा ठिंगू मास्टर आ गया है अपनी कक्षा में?''

उसके यूं कहने पर रजत के तो तन बदन में जैसे आग ही लग गई। उसने थोड़ा घूर कर उसकी ओर देखा तो उसने सिर पर हल्की सी चपत लगाते हुए कहा–''अरे देखो तो कैसे घूर रहा है? शायद इसे मालूम नहीं कि आज तक बिरजू महाराज के आगे तो किसी की सर उठने की भी हिम्मत नहीं हुई।''

और

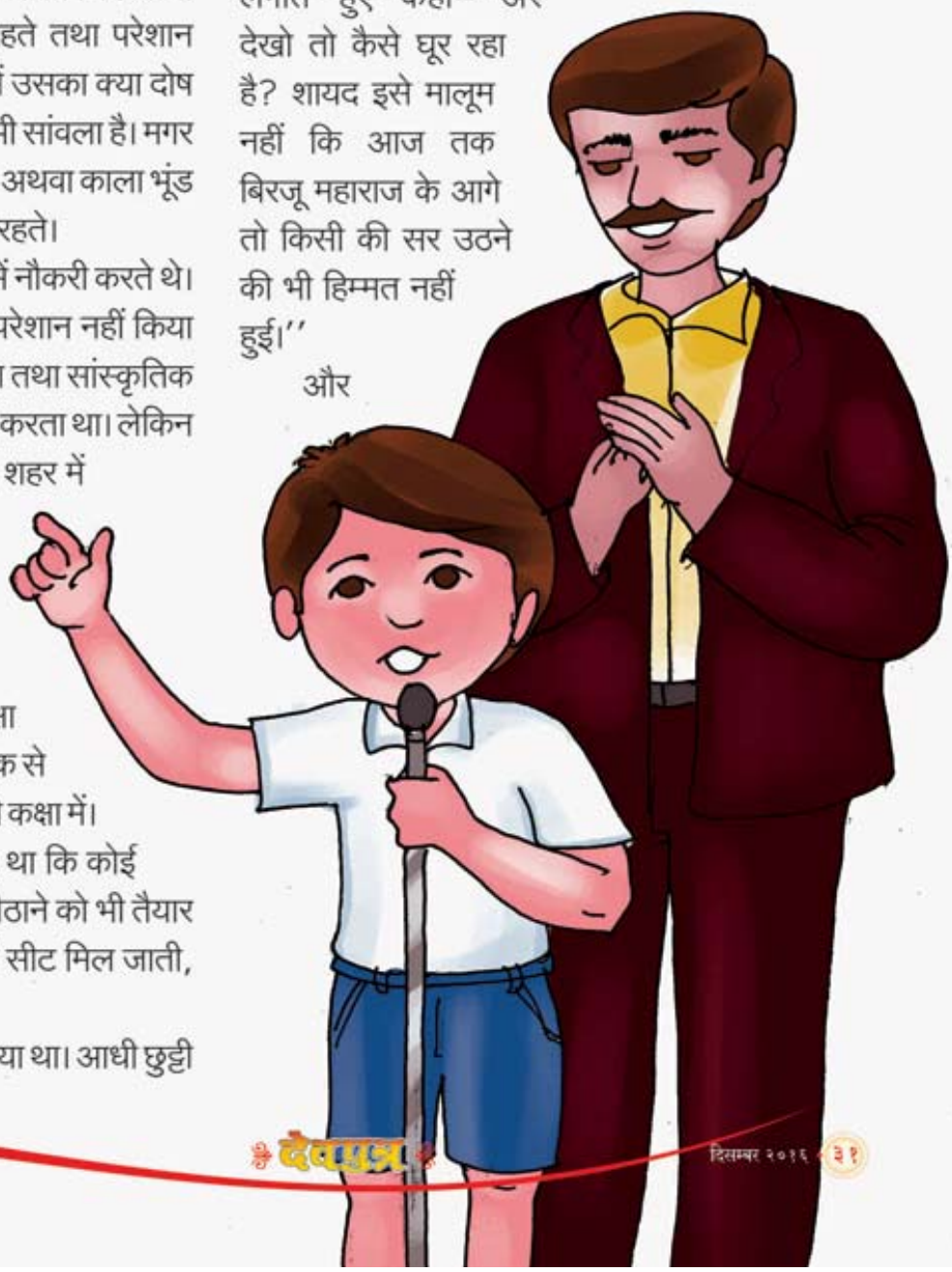

जल्दी ही रजत को पता चल गया था कि वह बिरजू कोई और नहीं उसकी अपनी ही कक्षा में पढ़ने वाला एक बिगड़ैल छात्र था और इस बिरजू पहलवाहन ने कोई भी कक्षा बिना तीन साल लगाए पास नहीं की थी। उसके बारे में तो यह भी मशहूर था कि उसके साथ पढ़ने वाले कई विद्यार्थी तो कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं मगर वह अभी तक हायर सेकेण्डरी भी उत्तीर्ण नहीं कर पाया था।

रजत को सबसे अधिक बिरजू ने ही परेशान किया हुआ था। रजत को देखते ही वह दूर से ही पुकारने लगता–''ओए ठिंगू मास्टर इधर तो आ...'' या फिर उसे कहता– ''अरे तुम्हारा नाम काला भूंड या ठिंगू मास्टर?'' और अगले ही पल वह स्वयं ही कह देता– ''नहीं भाई नहीं, ठिंगू मास्टर ही अच्छा लगता है।'' और इसके साथ–साथ अन्य बच्चे भी अब रजत को ठिंगू मास्टर कहकर बुलाने लगे थे। अपने लिए इस प्रकार का सम्बोधन सुनकर रजत को यूं प्रतीत होता जैसे किसी ने उसे तमाचा जड़ दिया हो। लेकिन वह विवश था। कद तो उसका छोटा था ही मगर वह शारीरिक तौर पर भी इतना बलवान न था कि अपने को परेशान करने वाले का मुंह बंद कर सके। इसलिए वह हर पल कुढ़ता रहता।

रजत ने कई बार अपने पिताजी से भी शिकायत की थी, मगर हर बार उन्होंने इसे समझाते हुए यही कहा था– ''बेटे, इसमें परेशान होने वाली कौन सी बात है। बच्चे तो शरारत करते ही हैं...अपने आप ही कुछ दिनों बाद हट जाएंगे।''

यद्यपि कुछ दिनों पश्चात् इस विद्यालय में भी रजत के कई मित्र बन गए थे। मगर फिर भी उसका मन इस विद्यालय में नहीं लगता था। बिरजू की चंडाल चौकड़ी से वह काफी परेशान रहता। इस चंडाल चौकड़ी की वजह से ही वह पूरे विद्यालय में ठिंगू मास्टर के नाम से मशहूर हो गया था। अपने आपको ठिंगू मास्टर कहकर बुलाया जाना रजत को बहुत चुभता था।

एक दिन परेशान होकर उसने कक्षा में प्रभारी से बात की थी। तो अध्यापक जी ने उसे समझाते हुए कहा था–बेटे, कद छोटा या बड़ा होना तथा रंग गोरा अथवा सांवला होना कोई महत्व नहीं रखता। वह चाहे तो परिश्रम तथा दृढ निश्चय से इतना ऊंचा उठ सकता है कि हिमालय पर्वत की चोटी भी उसके सम्मुख छोटी लगे। इसलिए लड़कों की शरारतों की ओर ध्यान न देकर तुम्हें पढ़ाई में मन लगाना चाहिए।''

एक पल रुक कर उन्होंने कहा था– ''मुझे तो यह भी पता चला है कि तुम अन्य कई गतिविधियों में भी निपुण हो। इसलिए बेकार की बातों की ओर ध्यान न देकर तुम्हें अपनी कला के जौहर दिखाने चाहिए। अभी डेढ दो माह पश्चात् बाल दिवस पर कई प्रकार की प्रतियोगिताएँ होंगी। उनमें भाग लेने के लिए तुम्हें अभी से कमर कस लेनी चाहिए।''

ना जाने मास्टर जी की बातों का असर था या फिर हालात के साथ रजत ने थोड़ा समझौता कर लिया था, अब वह पहले जितना परेशान न होता था।

बाल दिवस के अवसर पर शहर में सभी विद्यालयों की प्रतियोगिताएं हुई थीं। रजत ने तत्काल रंग भरो प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता तथा १०० मीटर दौड़ में भाग लिया था। यद्यपि शहर के कई विद्यालय को एक–एक दो–दो पुरस्कार प्राप्त हुए थे मगर रजत का ही एक मात्र विद्यालय ऐसा था जिसे पांच पुरस्कार मिले थे और इन पांचों पुरस्कार में से तीन पुरस्कार अकेले रजत ने ही जीते थे।

विद्यालय में प्रातः प्रार्थना के समय प्राचार्य जी ने रजत को पुरस्कार देने से पहले अपने भाषण में कहा था– ''यह हमारे लिए कितने गौरव की बात है कि हमारे विद्यालय के एक छोटे से लड़के ने शहर के सभी विद्यालयों में हमारे विद्यालय का नाम चमका दिया है। तुममें से जिन बच्चों ने प्रतियोगिताएं देखी होगी वे

बतला सकते हैं कि दौड़ प्रतियोगिता में कैसे खरगोश की भांति दौड़ा था यह बच्चा।'' बच्चों ने जोर से तालियां बजाकर उनकी बात का समर्थन किया था। प्राचार्य जी कह रह थे– ''और भाषण प्रतियोगिता में तो सभागृह में बैठे बच्चों ने इतना शोर मचाया था कि कानों में कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था और जब अपनी बारी आने पर रजत मंच पर आया तो कुछ ज्यादा ही शोर मच गया था। क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों हुआ? शायद तुम लोग वास्तविकता से परिचित नहीं हो। दरअसल कद छोटा होने के कारण रजत माइक तक नहीं पहुंच पा रहा था।

''लेकिन बच्चों, माइक थोड़ा नीचे करने के पश्चात अपनी जोशीली आवाज में जब रजत ने बोलना शुरु किया तो सभागृह में तो जैसे सभी चुप हो गए थे। इसकी बुलन्द आवाज सुनकर लगभग सभी ने पहले ही निर्णय सुना दिया था कि राज्य स्तर पर आयोजित इस भाषण प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार इस बच्चे को ही मिलेगा...और प्यारे बच्चों, हुआ भी वैसा ही।''

बच्चों ने एक बार फिर जोर से तालियां बजाकर अपनी खुशी प्रकट की।

''प्यारे बच्चो, तुम्हें जानकर और भी ज्यादा प्रसन्नता होगी कि तत्काल चित्रकला प्रतियोगिता में रजत द्वारा बनाए गए चित्र को न केवल प्रथम पुरस्कार मिला है बल्कि राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली चित्रकला प्रतियोगिता के लिए इसे चुना लिया गया है।''

तालियों की गड़गड़ाहट में प्राचार्य जी ने कहा– ''प्यारे बच्चों, तुम सभी को भी रजत की तरह लगन तथा मेहनत से काम करना चाहिए। रजत जैसे बच्चे मात्र अपना तथा अपने परिवार का नाम ही रोशन नहीं करते अपितु अपने प्रांत तथा देश का नाम भी चमका देते हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि यह विद्यार्थी बेशक कद में छोटा है मगर एक दिन लालबहादुर शास्त्री जी की भांति इसका नाम भी दुनिया के कोने–कोने में फैल जाएगा।''

और इसके पश्चात् खुशी के इस अवसर पर विद्यालय में छुट्टी कर दी गई थी।

बच्चों ने रजत को घेर लिया था– ''ठिंगू बधाई हो, ठिंगू बधाई हो'' का शोर चारों और गूंजने लगा था। मगर न जाने क्यों आज रजत को उनका ठिंगू कहना अखर नहीं रहा था।

इतनी देर से बिरजू की मंडली भी उसके पास आ पहुंची थी।

''ओ बल्ले–बल्ले ठिंगू मास्टर, तुमने तो कमाल कर दिया''–बिरजू ने उसे बाहों में भरते हुए कहा– ''तू तो यार छुपा हुआ रुस्तम निकला। मुझे तो लगता है जितना तू जमीन के ऊपर है उससे कहीं ज्यादा जमीन के नीचे हैं।''

तभी बिरजू की मंडली में से किसी ने कहा–''अब तो ठिंगू मास्टर तुम्हें पार्टी देना चाहिए...अगर कहीं हमें इतने इनाम मिले होते तो हमने तो सारे शहर को पार्टी कर देनी थी।''

लेकिन रजत के कुछ कह पाने से पहले ही बिरजु की आवाज ने सभी को चौंका दिया था–''अरे भई पार्टी तो मैं दूंगा। हम तो लम्ब धड़म्मे लोगों पर रौब ही डाल सकते हैं, लेकिन हमारे ठिंगू मास्टर ने तो सभी को मात दे दी...और खुशी के इस अवसर पर मेरी ओर से सभी को पार्टी ...क्यों ठीक है न ठिंगू मास्टर...?''

लेकिन रजत की आवाज तो लड़कों के हंसने की आवाज में सुनाई ही नहीं दे रही थी।

सही उत्तर

छोटे से बड़ा

९, १, २, ४, ६, १०, ७, ५, ३, ८

सबसे बड़ा गुण

कहानी : डॉ. रामसिंह यादव

पुराने समय की बात है एक गुरुकुल में दूर-दूर से विद्याध्ययन के लिए विद्यार्थी आया करते थे। उनमें बड़े-बड़े सेठ, साहूकार, अमीर-गरीब, ऊँचे-नीचे सबके बच्चे एक साथ पढ़ते थे।

उसी गुरुकुल (विद्यालय में उन दिनों एक बहुत बड़े प्रतिष्ठित सम्पन्न सेठ का पुत्र भी अध्ययन कर रहा था। जिसका नाम राहुल था। उसके सभी साथी विद्याध्ययन के पश्चात अपने-अपने घर चले गए लेकिन राहुल को गुरुजी ने घर वापस लौटने की अनुमति नहीं दी थी।

सेठ ने अपने नौकर को गुरुकुल अपने पुत्र राहुल को वहां से लाने बुलाने के लिए भेजा। लेकिन गुरुजी ने राहुल को घर भेजने से मना कर दिया। तब सेठ स्वयं उसे लेने को गुरूजी के पास पहुंचा। गुरूकुल के गुरुजी ने सेठजी का स्वागत किया। सेठ ने गुरूजी से पूछा-''मेरे पुत्र राहुल का अध्ययन पूरा हो गया है? फिर भी आपने उसे घर लौटने की अनुमति नहीं दी है, आखिर क्यों? मैं यही जानने के लिए आपके पास आया हूं।''

गुरुजी ने कहा- ''आपका पुत्र राहुल सभी विषय में सर्वश्रेष्ठ रहा है, लेकिन हमें उसकी एक परीक्षा और लेनी है, तभी वह सच्चा पढा-लिखा योग्य विद्यार्थी समझा जाएगा।''

सेठजी ने कहा-''गुरुवर! आप वह परीक्षा भी ले लीजिए।''

गुरुजी ने कहा- ''परीक्षा समय आने पर ही ली

जाएगी।''

सेठ जी सोच में पड़ गए। अब कौन सी ऐसी परीक्षा है जिसमें समय की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। रात को सेठ वहीं रुक गया।

अगले दिन जब वह उठा नित्यकर्म के लिए अतिथि शाला के दालान में बैठकर दांत साफ करने लगा। तभी उसे एक लड़का सिर पर लकड़ियों का बोझा उठाए आता दिखाई दिया। उसने सोचा कोई लकड़हारा आ रहा है। लेकिन उसके करीब आने पर जब उसने लकड़हारे के रूप में पुत्र राहुल को देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह गुस्से से भरकर बड़बड़ाने लगा मेरे बेटे राहुल से यहां ऐसा घिनोना काम कराया जाता है।

राहुल ने लकड़ियों का बोझा गद्दर भंडारगृह में रख दिया। तभी वहां गुरुजी ने प्रवेश किया। राहुल ने झुक कर उनके पैर छुए। गुरुजी ने प्रश्न किया– राहुल लकड़ियाँ ले आए? अब तुम अतिथि शाला की सफाई कर दो।''

राहुल बोला–''गुरुजी, जैसी आपकी आज्ञा।'' और झाड़ू लेकर वह अतिथि कक्ष अतिथि शाला की सफाई करने चल पड़ा।

सेठ को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह सोचने लगा कि क्या राहुल के मान सम्मान के बदले में यहां उससे ऐसे कार्य कराए जाते हैं। वह दौड़कर अपने पुत्र के पास पहुंचा और बोला–बेटा, राहुल यह झाड़ूं फेंक दो। कितना निम्न कार्य करते हो तुम? राहुल ने विनम्रता से कहा– पिताजी यह मेरे गुरुजी की आज्ञा है की मैं अतिथिगृह की झाड़ू बुहारी साफ–सफाई करूं।''

सेठ ने तैश में आकर कहा–''मेरे जैसे बहुत बड़े सम्पन्न प्रतिष्ठित सेठ साहूकार के बेटे को ऐसे छोटे निम्न घटिया काम कराना अच्छी बात नहीं है, यह बात तुम्हारे शिक्षक गुरुदेव क्यों नहीं समझ सके।'' राहुल बोला–''पिताजी, इसमें न तो गुरुजी की भूल है और न मेरी। मैं यहां एक विद्यार्थी छात्र हूँ और यहां जो पढ़ने आता है, उसकी कोई जातपात ऊंच–नीच नहीं होती। यह गुरुकुल विद्यालय ही हमारा घर होता है और अपने घर को कोई भी काम करने में हम निम्न वर्ग के छोटे नहीं हो जाते है। इसलिए इस अतिथिगृह की साफ सफाई झाड़ू बुहारा करना कोई छोटा काम नहीं है। शर्म की बात नहीं है।''

यह सुनकर सेठ कुछ न बोला। तभी गुरुजी वहाँ आ पहुंचे और राहुल की पीठ ठोककर शाबासी आशीर्वाद देते हुए बोला–''सेठजी, आपका पुत्र राहुल अंतिम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया है। विनम्रता विद्यार्थी का सबसे बड़ा गुण है। अपने से बड़े कोई भी व्यक्ति तथा गुरुजन जो कहे बताए वह काम कैसा भी हो विद्यार्थियों को करना चाहिए।

नम्रता–विनम्रता से विवेक आता है। क्या करना, क्या न करना, यह विवेक से। समझा जा सकता है। विवेक रूपी गुण जिसमें होता है वह कठिन से कठिन कार्य को भी आसानी से कर सकता है। दुखों में हारता नहीं। विनम्र व्यक्ति सबसे प्रेम व आदर का पात्र बनता है। जो व्यक्ति जितना अधिक विनम्र होगा। वह उतना ही अधिक सीख पाएगा। और जीवन में आगे प्रगति करेगा। और यह गुण आपक पुत्र राहुल में है। वहीं विद्यार्थी दुनिया में नाम यश पा जाता है।

सेठ ने क्षमा मांगी और वह बोले–गुरुजी। अब मैं आपकी बात समझ चुका हूँ। यही कि विनम्र व्यक्ति समाज के हर अवरोध को सरलता से पार कर सकता है। विद्यार्थियों में विनम्रता को होना अत्यावश्यक है।

गुरुदेव ने राहुल को घर जाने की आज्ञा दी और सेठ अपने बेटे राहुल को लेकर अपने गांव लौट आए।

● **उज्जैन (म.प्र.)**

(१४ दिसम्बर : ऊर्जा संरक्षण दिवस)

खेल खेल में

कहानी : नवनीत कुमार गुप्ता

आज गुड़िया की माँ मीरा बहुत खुश थीं, क्योंकि गुड़िया की पड़ोस में आए शर्मा जी की हम उम्र बेटी सेना के साथ दोस्ती हो गई। आज गुड़िया अपनी नई सहेली सोना के साथ घर-घर खेलने का मन बना चुकी थी। इसलिए वह दोनों गुड़िया के कमरे में उसके खिलौनों से खेल रहे थे। गुड़िया की माँ उनके इस प्यारे से खेल में अपने बीते बचपन का सुखद आनन्द ले रहीं थी। सोना ने गुड़िया के खिलौनों की रसोई तैयार करते हुए गुड़िया से कहा- ''आइए, खाएंगे। गुड़िया बड़े-बूढों की नकल

करते हुए छोटे से स्टूल पर बैठ गई, सोना ने चाय बनाने के लिए खिलौने वाली गैस जलाने का नाटक किया। अचानक गुड़िया ने कहा– ''अरे सोना जी, दो कप चाय के लिए इतना पानी? ऐसे तो गैस ज्यादा खर्च होगी। जितनी जरूरत है उतना ही पानी डाला करिए।'' माँ यह सुनकर मुस्कुरा दी और चुपचाप पर्दे के पीछ छिप कर दोनों बच्चियों का खेल देखने लगी। गुड़िया की बात सुनकर सोना ने अपना माथा पीटा और खुशी के कारण जल्दबाजी के कारण ज्यादा पानी डाल गई थी, वैसे गैस बचाने का मैं पूरा ख्याल रखती हूं। देखो न मेरा चूल्हा भी आई एस आई मार्क है।'' माँ यह सुनकर मंद–मंद मुस्करा रही थी। सोना आगे बोली–''और सुनाओ, तुम्हारी बहु का क्या हाल है।''

''अरे, वह तो मेरी सुनती ही नहीं कितनी बार कहती हूं, कि गैस बचाने के लिए प्रेशर कुकर का प्रयोग किया गरें। इससे खाना जल्दी भी पकता है, पर आजकल की लड़कियाँ कहाँ सुनती हैं''

गुड़िया ने मां की चुन्नी से बनाई साड़ी को ठीक करते हुए कहा। ''सही, कहा बहन, मेरे ये तो अगर गैस पर कुछ गर्म करते हैं, तो पहले बर्तन हटा लेते हैं फिर गैस बंद करते हैं, कई बार तो गैस पर बिना कोई बर्तन रखे जलती गैस छोड़कर फोन सुनने चले जाते हैं या दरवाजा खोलने, अब बताओ, बहन, गैस ऐसे जलती रहे, तो कितना नुकसान होता है।'' सोना खिलौनों की कप–प्याली गुड़िया के सामने रखती हुई बोली। माँ ने किसी तरह अपनी हंसी रोकी। वह इनके प्यारे खेल और प्यारी बातों का पूरा आनंद ले रही थी।

गुड़िया ने छोटे से कप में चाय पीने का नाटक करते हुए चिंता जातते हुए कहा–''अब हमारे पड़ोस की श्रीमती गुप्ता को ही लो, मैं पचास बार कह चुकी हूं कि बहन, दाल, चावल आदि को पकाने से पहले पानी में भिगो लिया करो क्योंकि न भिगोने से उनके पकने में ज्यादा समय और ज्यादा गैस लगती है। पर श्रीमती गुप्ता कहां मानने वाली है, गुप्ता जी का व्यवसाय जो है।'' अब मां के लिए हंसी रोकना मुश्किल हो रहा था, पर इन बच्चियों की जानकारी पर वह हैरान थीं। माँ सोचती था कि बच्चे कार्टून देखते हुए और गृहकार्य करते हुए ही समय बिता देते हैं. परन्तु आज मीरा को अहसास हो रहा था कि ये बच्चे बड़ों की हर बात ध्यान से सुनते हैं और उन्हें समझ कर, अपने खेल में ढाल कर बड़ों से बहुत कुछ कह जाते हैं। अचानक गुड़िया बोली– ''सोना जी, तुमने यह कम चौड़े पेंदे वाले बर्तन क्यों रखे हैं, और तुम्हारे ज्यादातर पकाने वाले बर्तनों के ढक्कन भी नहीं है। यह गलत बात है बहन, तुम जब जानती हो कि चौड़े पेंदे वाले बर्तन और ढके बर्तन में खाना पकाने से गैस की बचत होती है, तो फिर यह लापरवाही क्यों?'' सोना गहरी सांस छोड़ते हुए बोली– ''बहन यह बर्तन बहुत पहले के हैं, अब इनकी पगार मिले तो धीरे–धीरे चौड़े पेंदे वाले और ढक्कन वाले बर्तन खरीदना शुरु करूँगी।

दोनों बच्चियों के सच्चाई भरे खेल ने मां की आँखों में आंसू ला दिए थे। जो खुशी के आंसू थे, क्योंकि उन्हें पता था कि वह बच्चों के खेल की हर बात आज से ही अपनाएंगी, जिससे ऊर्जा संरक्षण के कारण उनका और इन बच्चों का भविष्य सुखद हो।

● नई दिल्ली

बाल प्रस्तुति

तितली

कविता : स्मृति प्रिया

दूर–दूर से रंग बिरंगी,
उड़ती–उड़ती तितली आती।
बैठ फूल पर रस पीती है,
आहट सुनकर उड़ जाती है।

● खगड़िया (बिहार)

छज्जू भगत

कहानी : डॉ. हूंदराज बलवाणी

किसी समय एक शहर में छज्जू भगत रहा करते थे। उनका नाम सच्चाई और ईमानदारी के कारण पूरे शहर में प्रसिद्ध था।

एक बार एक पठान उनके पास आया। उसने कहा– ''भगत, मैंने आपकी ईमानदारी के चर्चे सुन हैं। किसी काम से मुझे कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ रहा है। मेरे साथ मेरी पत्नी भी आ रही है। घर में हम दोनों के अलावा और कोई नहीं है। अतः आप कृपा करके मेरी यह थैली अपने पास संभालकर रखें। इसमें सौ मुहरें है। मैं वापस आकर यह आपसे ले लूंगा। आपका बड़ा उपकार होगा।''

छज्जू भगत ने उत्तर दिया–''भाई, तुम अपने हाथों से अपनी थैली उस सामने वाली अलमारी में रख दो और उसे ताला लगा दो।''

पठान ने ऐसा ही किया। फिर पठान निश्चित होकर वहां से चला गया।

कुछ दिनों के बाद पठान वापस आया और छज्जू भगत से अपनी थैली मांगी।

भगत ने अलमारी की चाबी से उसे देते हुए कहा– ''भाई, तुम अपनी थैली जहां रखकर गए थे वहीं पर ही पड़ी होगी। अपनी थैली अपने हाथ से ही निकाल लो।''

पठान ने थैली निकाली और उसी समय थैली में रखी मुहरें गिनने लगा। उसे आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि थैली में रखी हुई मुहरें में से एक मुहर कम थी। उसने दूसरी बार मुहरें गिनी पर अब भी एक मुहर कम निकली। तीन–चार मुहरें कम निकली। तब पठान तिलमिला उठा। छज्जू भगत को बुरा भला कहने लगा। उसने चिल्ला–चिल्लाकर कहा– '' बड़े बन बैठे हो छज्जू भगत। लोग तुझे अच्छा और ईमानदार समझते हैं। लेकिन आज तेरी

कलाई खुल गई। तूने अमानत में खनायत की है और लोगों के सामने तेरी पोल खोल दूंगा। इससे अच्छा है कि तुम मेरी चुराई हुई मुहर वापस दो या मुहर के बराबर मूल्य चुका दो।''

छज्जू भगत ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि–''भाई, तुम अपनी थैली अपने हाथ से जहाँ रखकर गए थे वह वहीं पड़ी रहने दी थी। मैंने तो क्या, और किसे ने भी इसे हाथ नहीं लगाया। और मैं तुम्हारा धन लेकर ईश्वर को क्या जवाब दूंगा।''

फिर भी पठान नहीं माना। वह और लोगों को भी बुला लाया। कहने लगा–''देखो भाइयो, यह आपका छज्जू भगत! बड़ा भगत बनकर फिरता है। यह छज्जू भगत नहीं बगुला भगत है।''

इकट्ठे हुए लोग छज्जू भगत को शंका की दृष्टि से देखने लगे। और कोई रास्ता न देखकर छज्जू भगत ने एक मुहर के बराबर धन देकर पठान को विदा कर दिया।

घर आकर पठान ने अपनी पत्नी से यह बात कहीं बात सुनकर पत्नी बोली–''यह आपने क्या कर दिया। भगत के ऊपर लांछन लगा दिया पहले मुझसे तो पूछा होता। आप भगत के पास थैली रखने गए थे तब आवश्यकता पड़ने पर मैंने एक मुहर निकाल ली थी और आपको बताना भूल गई थी। अब शीघ्र ही उस देवता रूपी इंसान के पास चलो और अपनी भूल के लिए उनसे क्षमा मांगो तथा मुहर के बदले में लिया धन लौटा आओ।''

पठान की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। वह अपने आपको कोसने लगा कि अनजाने में उससे बड़ी भूल हो गई है। फिर दोनों पति–पत्नी छज्जू भगत के पास गए। दोनों भगत के पांव पकड़कर क्षमा मांगने लगे। पठान ने रोते–रोते बताया कि पत्नी ने मुहर निकाल ली थी, जिसका उसे पता न होने के कारण वह एक बड़ी भूल कर बैठा था और अनजाने में भला बुरा कह बैठा था।

भगत ने मुस्कराते हुए कहा–''भाई मुझे तुम्हारे किए पर कोई दुःख नहीं है। इंसान से गलती हो जाती है। पर उस गलती पर पछतावा ही सब से बड़ी क्षमा है। जो हो गया वह सब भूल जाओ।''

● **अहमदाबाद (गुजरात)**

माचिस की तीलियां

चित्रकथा - देवांशु वत्स

दिमागी कसरत

तिकोनी पहेली

● अक्टूबर '34 में जयप्रकाश नारायण और मीनू मसानी के साथ इन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया था ● विष्णु का एक अवतार ● अवध की बेगम जिनका नाम 1857 की क्रान्ति के साथ जुड़ा हुआ है ● भारत का एक संघ शासित प्रदेश जो अरब सागर में स्थित है ● जायसी रचित 'पद्‌मावत' महाकाव्य के अनुसार सिंहल की राजकुमारी ● चंचल व तेज़ दौड़ने वाला एक ऐसा पक्षी जो लड़ाने के लिये ही पाला जाता है ● ओशो ● ब्रह्मा की मानस कन्या
● भारत का एक पड़ोसी देश
● 17 वीं शताब्दी का प्रख्यात फ्लेमिश चित्रकार
● भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा
● विभीषण व सूर्पनखा का अग्रज ● इस क्षेत्र में हुई तीन लड़ाइयां प्रसिद्ध हैं
● 'टाइगर' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी ● विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक जिसने पन्द्रह वर्ष की उम्र में 'द वीकली हैराल्ड' नामक समाचारपत्र के प्रकाशन से लेकर इसके विक्रय तक का कार्य अकेले किया

इन्हें पहचानिए तो ज़रा !

1

2

3

4

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

पुस्तक परिचय

बाल साहित्यकार प्रो. सी.बी. श्रीवास्वत 'विदग्ध'
द्वारा रचित बालगीतों की सुमधुर श्रंखला

बालगीतिका **बालकौमुदी** **सुमनराधिका** **चारुचन्द्रिका**

प्रत्येक का मूल्य ६० रु.
प्रकाशक – विमल बुक सेन्टर, १, अरिहन्त कॉम्पलेक्स, नाहरगढ़ रोड़, जयपुर – १

डॉ. राजेन्द्र पंजियार की मनोरंजन से भरपूर २ बाल काव्य कृतियाँ

नाना का छाता

मूल्य ५०/-

प्रकाशक
यतीन्द्र साहित्य सदन
सरस्वती विहार, शब्दगंध द्वार
कोर्ट गेट क्रं. १ के सामने, भीलवाड़ा
३११००१ (राज.)

बन्दर का ब्याह

मूल्य ५०/-

चूहेराम की हवाई यात्रा

डॉ. सत्यनारायण भटनागर द्वारा लिखी २० मनोरंजक बाल कहानियाँ
प्रकाशन - रायल पब्लिकेशन
१२, परमहंस कालोनी, बन्धु नगर,
जयपुर-२३ (राज.)

मूल्य १५०/-

शैक्षिक सूक्ति

स्नेहलता की सरस एवं अनुभव सम्बल लेखनी से निसृत प्रेरक कविताओं का सुंदर संग्रह
प्रकाशन - राखी प्रकाशन
१२-ए, रमन टावर, संयज प्लेस
आगरा २८२००२ (म.प्र.)

मूल्य २५/-

जादू शिक्षा का –

विवेक रंजन श्रीवास्तव के चार महत्वपूर्ण बाल नाटकों का संग्रह
प्रकाशन - विमल बुक सेन्टर
१,अरिहन्त काम्पलेक्स, नाहरगढ़
रोड़, जयपुर-१ (राज.)

मूल्य ९०/-

दयानंद ऋषिवर अति प्यारे

डॉ. राकेश चक्र की १६ रोचक बाल कविताएं
प्रकाशन - आरती प्रकाशन
इंदिरा नगर, लालकुआ
(नैनीताल) उत्तराखण्ड

मूल्य ४५/-

आपकी पाती

देवपुत्र का सितम्बर १६ अंक मिला। घंटेभर से इसे देख ही रहा था कि स्कूल से लौटे पोते ने देखते ही झटक लिया और कहा– ''दादाजी यह तो मेरे पढ़ने की चीज है। आप तो गीता रामायण ही पढ़िए।'' मैंने कहा– मनोरंजन किसे नहीं चाहिए, बेटा! मनोरंजन के साथ ही इस अंक में कई बड़े प्रेरक प्रसंग हैं। हिन्दी दिवस पर प्रकाशित हिन्दी संबंधी कई अच्छी कविताएं है जो तुम्हें भी अच्छी लगेंगी।'' उसने कहा–''मुझे तो इस पत्रिका की कहानियाँ ही ज्यादा पसंद आती हैं। तभी मैंने कहा– तो ठीक है कहानियां पढकर बताना, कौन–सी सबसे अच्छी लगी, फिर मैं पढकर अपनी पसंद बताते हुए उसका कारण भी बताऊंगा।'' इस अंक में स्व. शंकरदयाल सिंह जी का हिन्दी विषयक संस्मरण अविस्मरणीय है। राजभाषा हिन्दी पर लिखी पुस्तक बहुचर्चित हुई है। एकता गीत तो याद कर लेने लायक है। शिक्षक दिवस पर प्रकाशित झोपड़ियों में पढाने जा रहे आयुक्त झकझोरने वाला है। सम्पादकीय में जापान के बच्चे का प्रसंग वहां की जागरुकता का रोमांचक उदाहरण है। इस अंक की ऐसी मोहक सामग्रियों के लिए आपकी सम्पादकीय कुशलता पर गर्वोन्नत हूं।

– डॉ. राजेन्द्र पंजियार, भागलपुर (बिहार)

जानो पहचानो

● २६ दिसम्बर १८९९ को जन्म हुआ पटियाला (पंजाब) के सुनीम कस्बे में।

● ७ वर्ष के होने तक माता–पिता का साया सिर से उठ चुका था।

● समस्याओं और कष्टों को साथी बना बड़े हुए तब अंग्रेजों का भारतीयों पर दमन चक्र तेजी से चल रहा था।

● जलियांवाला बाग का भीषण नरसंहार इनके मन में कीलों की भांति गहरे पैठ गया था।

● इस हत्याकाण्ड क बदला अवश्य लूंगा चाहे अपने प्राणों की ही आहूति क्यों न देना पड़े। यह शपथ लेकर वे भगतसिंह की प्रेरणा से क्रांति के मैदान में कूद पड़े।

● और प्रतिज्ञा पूरी की लंदन के केस्टन हाल में भरी सभा में जलिया वाला बाग के खलनायक जनरल डायर के सीने में गोलियाँ उतार कर दिन था १३ अप्रैल १९४०।

● लंदन में पेटन विला जेल में १२ जून १९४० को फांसी का फन्दा गले में पड़ा और वे भारत माता की अर्चना में प्राण दीप न्यौछावर कर चले गए।

● कौन थै वे क्रांति नायक ?

(उत्तर इसी अंक में)

झण्डा दिवस : ७ दिसम्बर

वीरों को प्रणाम

कविता : अश्वनी कुमार पाठक

सीमा पर खून बहाते जो,
शत् शत् प्रणाम उन वीरों को।
भारत माँ का मुख दमकाते,
बहुमूल्य चमकते हीरों को।
बीमार पड़े माँ-बाप वृद्ध,
पत्नी, बच्चों से मुख मोड़ा।
रण-भेरी की आवाज सुनी,
रण-भूमि चले, सब सुख छोड़ा।
भारत माता की जय बोली,
जो आया सम्मुख भून दिया।
बन्दूक चली, तड़-तड़-तड़-तड़,
जाने कितनों का खून पिया।
प्राणों पर खेल गए अपने,
पर पीठ नहीं फेरी रण से।
फूटे फव्वारे, लहू बहा,
भर गई देह पूरी व्रण* से।
हम जन्म-भूमि के सेवक बन,
दुश्मन के खट्टे करें दाँत।
बिसरा दें सारे भेद-भाव,
सब एक, न कोई जात पाँत।

* व्रण = घाव

● सिहोरा (म.प्र.)

शिशु गीत लेखन कार्यशाला

देवरीकलां। बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर के तत्वावधान में सागर जिले के देवरीकलां में प्रांत स्तरीय आयोजन में शिशु गीत लेखन की प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। २२ अक्टूबर २०१६ को आयोजित इस कार्यशाला में महाकौशल के रमझिरीया, देवरी, तेजगढ़, तेन्दूखेड़ा, बडियागढ़, पथरिया, जबेरा, गढ़ा कोटा, टड़ा, केसली, राहतगढ़, दमोह, हटा, हिण्डोरिया, बांदकपुर, खिमलासा, सागर सदर, गौरझामर, शाहगढ़, बण्डा, कर्रापुर, बीना, बामोरा, पगारा, मकरोनिया, जैसी नगर, खुरई, रहली, लक्ष्मीपुरा और महाराजपुर आदि से शिशुकथा के ९४ चयनित अध्यापकों को शिशु गीत लिखने का प्रशिक्षण बाल साहित्य सृजन पीठ की ओर से दिया गया।

पूरे मध्यप्रदेश में विद्याभारती के शिशु शिक्षा सह प्रमुख श्री प्रभात सिंह जी की विशेष उपस्थित सम्पूर्ण कार्यशाला में प्राप्त हुई।

सही उत्तर

जानो पहचानो

शहीद ऊधमसिंह

सही उत्तर

दिमागी कसरत

(१) इण्डिया गेट
(२) लोटस टेम्पल
(३) बुलन्द दरवाजा
(४) सांची स्पूत

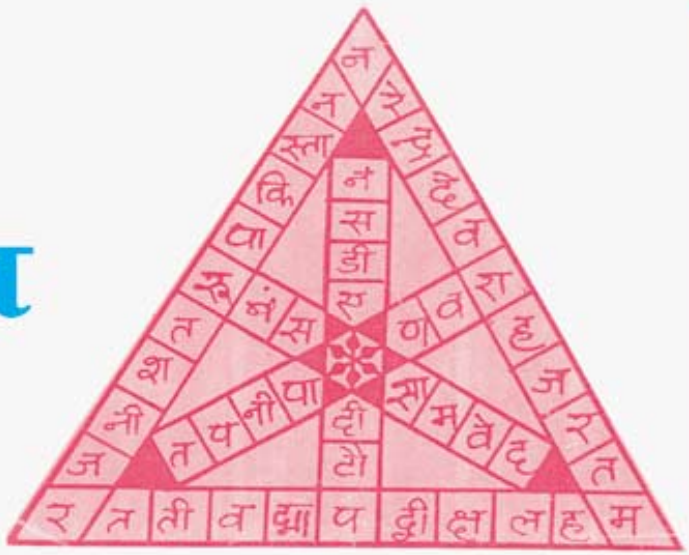

२५ सितम्बर २०१६ को बाल साहित्य सृजनपीठ द्वारा आयोजित बिलावली तालाब के शताब्दी वर्ष पर आयोजित पर्यावरण चित्रकला में पुरस्कृत चित्र

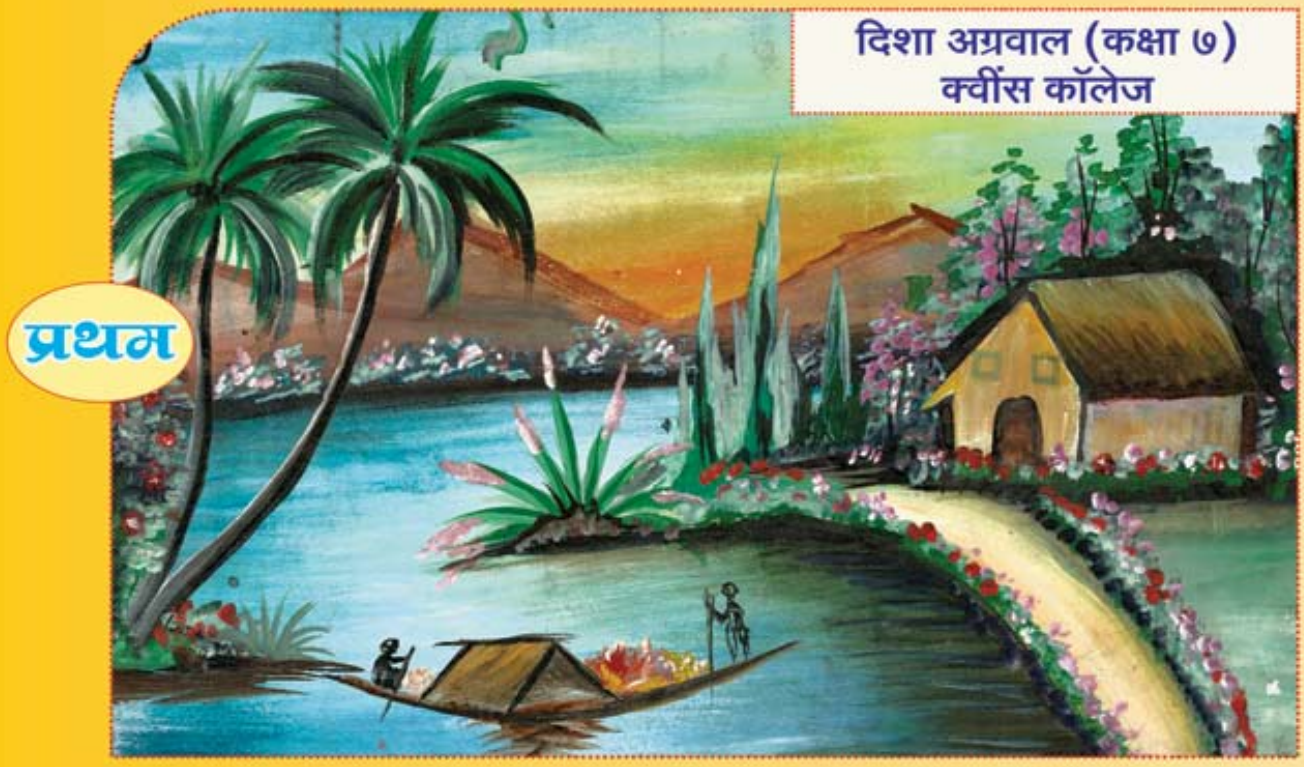

दिशा अग्रवाल (कक्षा ७)
क्वींस कॉलेज

प्रथम

डायना फ्रांसिस (कक्षा ११)
क्वींस कॉलेज

द्वितीय

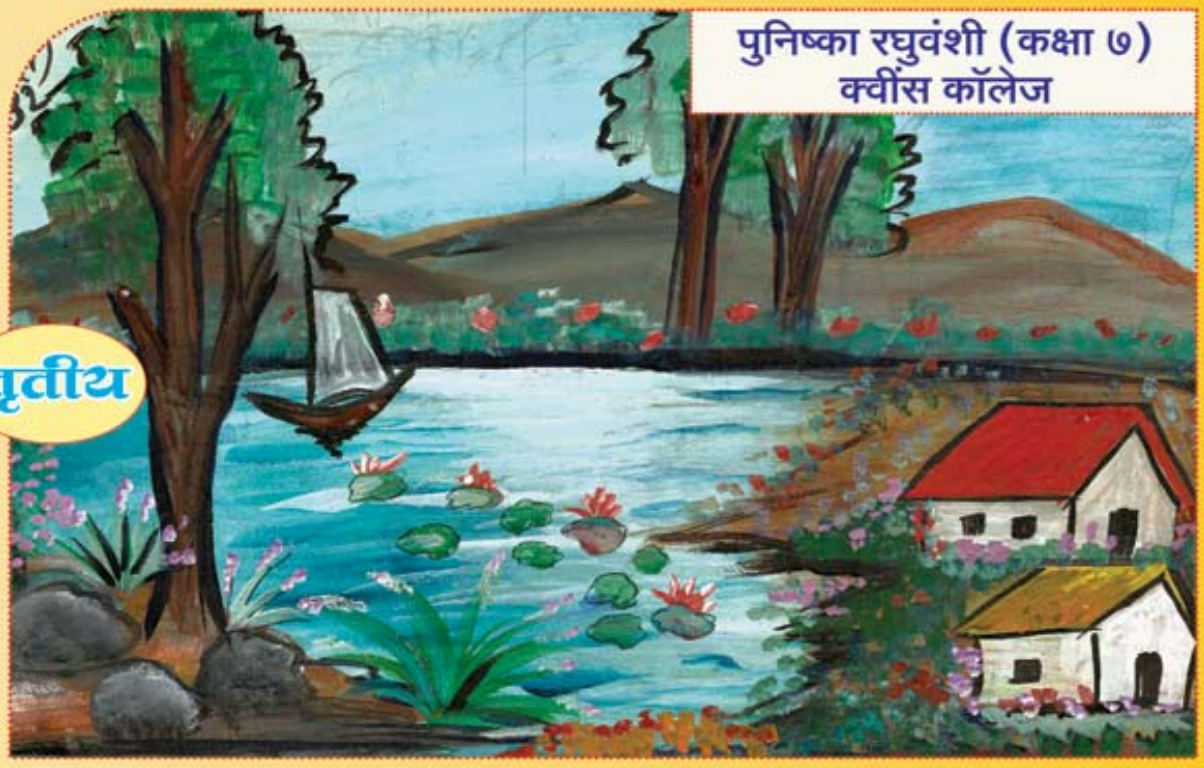

पुनिष्का रघुवंशी (कक्षा ७)
क्वींस कॉलेज

तृतीय

बाल प्रस्तुति

प्रकृति

कविता : सर्वेश कुमार चौहान

आओ हम सब मिलजुल कर,
माँ प्रकृति का मान बढ़ाए।
इस सुन्दर सी वसुंधरा को,
पेड़ पौधों से खूब सजाएं।।

• उज्जैन (म.प्र.)

चित्रांकन :
सौम्या सिंहल

स्वच्छता से समृद्धि

स्वच्छ मध्यप्रदेश

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

- मध्यप्रदेश में 54 लाख से ज्यादा ग्रामीण घरों में शौचालय बने।
- 2400 से ज्यादा ग्राम पंचायतें खुले में शौच से मुक्त।
- सभी स्कूलों एवं आंगनवाड़ी में शौचालय निर्माण प्रगति पर।
- दो अक्टूबर 2019 तक सभी घरों में होंगे शौचालय।
- इंदौर जिला देश में स्वच्छता में दूसरे नम्बर पर।

स्वच्छ मध्यप्रदेश सुरक्षित परिवेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

R.O. No. D- 79932

मध्यप्रदेश शासन

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

मध्यप्रदेश
निवेश का बेहतर परिवेश

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

विकास का सफर निरंतर ...

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2016 को मिली व्यापक सफलता

- भागीदार देश: 42
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि: 5122
- बिजनेस टू बिजनेस एवं बिजनेस टू गवर्नमेंट बैठक: 356
- जीआईएस के दौरान पंजीकृत भूखंड: 30
- 2630 इंवेस्टमेंट इंटेन्शन्स: INR 5.62 (करोड़ में)
- सेक्टोरल सेमीनार: 13
- कंपनियों की प्रदर्शनी: 60000 (वर्ग फीट)

Follow Chief Minister Madhya Pradesh

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /ChouhanShivrajSingh

INVEST MADHYA PRADESH
GLOBAL INVESTORS SUMMIT
22nd & 23rd OCTOBER, 2016

/investmadhyapradesh
/investmp

सरल प्रक्रिया... असीमित अवसर

R.O. No. D- 79932

चुटकुले

विष्णुप्रसाद चौहान,
ढाबलाखुर्द

शिक्षक (छात्र से) : अगर तुमने सुबह तीन, दोपह को दो और शाम को एक रोटी खाई तो बताओ कुल कितनी रोटियां खाई?

छात्र : माँ, खाते समय रोटी गिनने से मना करती है।

****

आधा बचपन तो इसी भ्रम में बीत गया कि समबाहु, विषमबाहु और समद्विबाहु त्रिभुज के नाम है या राक्षसों के।

****

एक छोटा बच्चा सड़क पर भीख मांग रहा था कि तभी वहां से गुजर रही एक औरत ने उसे समझाते हुए कहा- ''तुम्हें तो इस उम्र में स्कूल जाना चाहिए।''

उस बच्चे ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया- ''मैं तो स्कूल भी गया था, पर वहां से मुझे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिली।''

****

डॉक्टर कितनी भी काबिल क्यों न हो, वो स्कूल टाईम पर होने वाले बच्चों के पेट दर्द को नहीं रोक सकता।

****

सोनू (अपने दोस्त मोनू से) : मेरा मोबाईल खो गया है, क्या करूं?

मोनू : सबसे पहले फेस बुक पर अपडेट कर।

****

अगर भीड़ में सबका सिर झुका हुआ है और आपका सिर ऊंचा है तो... आप महान नहीं है। ...बल्कि आपका नेट पैक खत्म हो गया है।

डॉ. मालती शर्मा को हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान २०१६

देवपुत्र की सुपरिचित लेखिका देवपुत्र गौरव सम्मान से विभूषित डॉ. मालती शर्मा को साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा (राज.) में हिन्दी लाओ देश बचाओ भव्य सम्मान समारोह में शाल श्रीनाथ जी की प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र और ११०००/- रु. की राशि देकर सम्मानित किया गया।

इसके पूर्व मालती शर्मा को उ.प्र. हिन्दी संस्थान के लोकभूषण सम्मान के साथ देश विदेश के अनेक सम्मान पुरस्कार प्राप्त हो चुके है।

यह जानकारी विपिन भारती ने दी।

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा संपादित एवं स्थापित श्री गुरु ग्रंथ साहिब विनम्र झलकियाँ...

श्री आदिग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश पर्व पर श्री गुरु अरजन देव जी और प्रथम ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी

श्री गुरु अरजन देव जी भाई गुरुदास जी को श्री आदिग्रंथ (गुरु ग्रंथ साहिब) लिखवाते हुए

श्री गुरु गोविन्दसिंह जी भाई मनीराम को श्री गुरुग्रंथ साहिब की संपूर्ण बीड़ लिखाते हुए

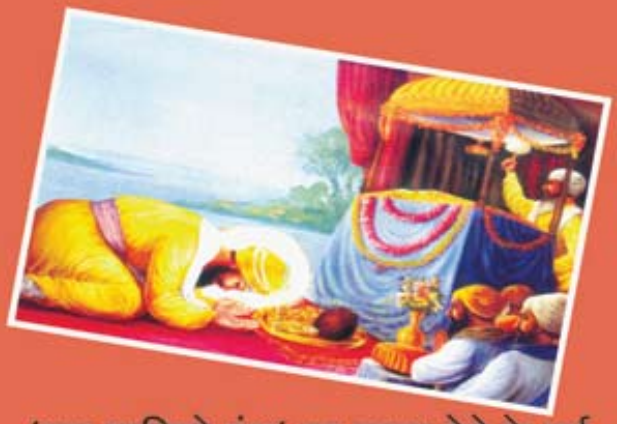

'गुरु मानियो ग्रंथ' का हुकुम देने के पूर्व श्री गुरु गोविन्द सिंह जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब को मत्था टेकते हुए

श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दशमेश गुरु गोविन्द सिंह जी

श्री गुरुग्रंथ साहिब को स्वर्ण मंदिर में स्थापना के लिए ससम्मान जाते हुए बाबा बुड्ढा जी

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी से सम्बन्धित पवित्र स्थल

तख्त श्री पटना साहिब

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी का
जन्मस्थान (१६६६ ई.)

तख्त श्री केसगढ़ साहिब आनंदपुर

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने
१६९९ ई. खालसा का सृजन किया

तख्त श्री दमदमा साहिब

जहाँ १७०६ ई. में श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने
श्री गुरुग्रंथ साहिब की संपूर्ण बीड़ लिखवाई

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना